Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 मई 2024

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 8 अंक 5, मई 2024

http://www.kilol.co.in

स्कूली शिक्षा में समर्थन हेतु समर्पित संस्था
WINGS2FLY
SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक - डॉ. रचना अजमेरा
सह-संपादक - डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, डॉ. पी सी लाल यादव, बलदाऊ राम साहू, धारा यादव, गंगाधर साहू, नेम सिंह कौशिक
ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ - रामचरण साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चों,

मई माह हमारे देश में भीषण गर्मी के लिए जाना जाता है। मई माह में बहुत तेज धूप रहती है। धूल भरी आंधी एवं गर्म हवाएं चलती है। गर्मी के कारण ही हमारे स्कूलों में अवकाश रहता है। तेज धूप में खाली पेट न रहें एवं घर से बाहर न जावें। ऐसे में लू लगने की संभावनाएं बहुत होती है। अति आवश्यक हो तो अपने चहरे को ढक कर एवं शरीर ठीक से कपड़े पहन कर ही बाहर जावें। गर्मी में हम घर पर ही रह कर ग्रीष्मकालीन अवकाश का सदउपयोग कुछ अलग हट कर नया करने, सीखने व पढ़ने के लिए कर सकते हैं।
मुझे पूरा विश्वास है आप सभी अपनी रुचि को पूरा करने के लिए संकल्पित होंगे।

अरे हाँ ! एक बात तो भूल ही रही थी। आप किलोल पढ़ना व अपनी अपनी रचना भेजना न भूलें। आपकी रचनाओं का हमें इंतजार रहता है।

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक : डॉ. आलोक शुक्ला
मुद्रक : कीरत पाल सलूजा
प्रकाशक : श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित, संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

“ प्रयास ”

एक गांव में आग लग गई। सबके घरों में आग बढ़ती ही जा रही थी और गांव के लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे। तभी झोपड़ी के किनारे पेड़ पर बैठी हुई चिड़िया ने यह दृश्य देखा। फिर चिड़िया ने अपनी चोंच में पानी भरकर झोपड़ी की आग को बुझाने का प्रयास शुरू करने लगी।

वह बार-बार अपनी चोंच में पानी भर कर लाती और आग में डालती। जब गांव के कुछ लोगों ने चिड़िया को पानी डालते देखा तो वह भी जोश में आ गए और उन्होंने कहा जब चिड़िया कोशिश कर सकती है तो हम क्यों नहीं? और फिर गांव वालों ने मिलकर आग बुझाने के लिए पानी डालना शुरू किया। दूसरे पेड़ पर बैठा कौआ यह सब देख रहा था ।

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

सुंदर लाल डडसेना मधुर, सहायक शिक्षक, शास. प्रा. शाला केंदुढार,सरायपाली,जिला महासमुंद द्वारा पूरी की गई कहानी

वह सोचने लगा कि अगर एक छोटी चिड़िया ये प्रयास कर सकती है तो मैं क्यों नहीं?उसने काँव काँवकर गाँववालों को प्रेरित किया। गाँववाले ने मिलकर चिड़िया और कौआ की प्रेरणा से आग बुझाई। उनकी मेहनत और सामर्थ्य ने उन्हें सफलता दिलाई।आग बुझाने के बाद, गाँववालों ने नए घर बनाने का काम शुरू किया और सभी एक साथ मिलकर गाँव का पुनर्निर्माण किए। सभी ने एक-दूसरे के साथ मेहनत करके एक सुंदर और सुरक्षित गाँव बनाया, जिसमें प्रेम और एकता का वातावरण था। इस घटना ने सभी को यह सिखाया कि समृद्ध समाज के निर्माण में साथ मिलकर काम करना कितना महत्वपूर्ण है।

खेलावन जांगड़े निखिल बम्हनी जिला महासमुन्द छत्तीसगढ़ द्वारा पूरी की गई कहानी

दूसरे पेड़ पर बैठा कौआ यह देख रहा था और उसे, उससे कोई फर्क नही पड़ नहीं रहा था वह सोचता था कि जिसका घर जलता है तो जलने दो मुझे क्या। इस भावना के साथ वह उस नजारा का आनंद ले रहा था क्योंकि कौआ के मन मे दयाभाव और सहयोग की कोई भावना नहीं था वह केवल और केवल अपना देखता था।

नन्ही सी चिड़िया जब आग बुझाने अपने चोंच पर पानी लेकर जाती थी तब भी वह कौआ उसे देखकर रोकता टोकता था और उसके मनोबल को तोड़ने का प्रयास करके कहता था कि तुम्हें क्या हैं जिसका घर जल| रहा है उसे जलने दो तुम क्यों अपना शरीर को कष्ट दे रही हो इतना भाग दौड़ करने से क्या मिलेगा तुम्हें? इससे तुम्हारा ही समय बर्बाद होगा और कुछ नहीं, इससे कुछ हासिल नहीं होगा तुम्हें। और एक तुम्हारी छोटी सी चोंच से कितना आग बुझा सकती हो।

लेकिन इन सब बातों को नन्ही सी जान चिड़िया अनदेखा कर उस स्वार्थी कौआ को कहा मुझे इससे कोई लाभ नहीं चाहिएं मैं किसी की संसार उजड़ते नही देख सकती और ये मेरा कर्तव्य है कि अगर कोई कष्ट और दुविधा में हैं तो उसका निस्वार्थ भाव से मदद करूं कहकर वह आग बुझाने के लिए अथक प्रयास करने लगी।उस नन्ही सी जान चिड़िया के इस मनोभाव को देखकर गांव के लोगो के साथ -साथ कौआ का भी मन को प्रेरित कर दिया।

और एक सभी एकजुट होकर बस्ती में लगी आग को बुझाने में सफल हो गये।

मदद मे स्वार्थ देखा तो ओ मदद कैसा

संतोष कुमार कौशिक शिक्षक शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी, जिला-मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

इसी बीच दूसरे पेड़ पर बैठा हुआ कौवा ने उस चिड़िया से पूछा कि तुम्हें अपनी जान की परवाह नहीं है.तुम बार-बार चोंच में बूँद- बूँद पानी ला करके आग पर उड़ेल रही हो.क्या इससे कोई फर्क पड़ने वाला है?इससे आग बुझना तो दूर उसकी तपिश में भी कोई कमी नहीं आने वाली है.

कौवा की बातों को सुनकर चिड़िया बोली-"मैं जानती हूँ कि मेरे इस छोटे से प्रयास से आग की लपटों पर कोई असर नहीं पड़ने वाला है,पर यह भी जानती हूँ कि मैं भी गांव वालों के साथ इसी बस्ती में रहती हूँ और मेरा भी कर्तव्य बनता है कि इस विपत्ति के समय मुझे भी अपना योगदान अवश्य देना चाहिए.विपत्ति काल में जो लोग भाग जाते हैं या पास में बैठे-बैठे मजा देखते हैं.वह माफी के काबिल नहीं होते. इसलिए मैं तो बस चोंच भर पानी से सांकेतिक ही सही अपना कर्तव्य निभा रही थी."

चिड़िया की बातों को सुनकर कौवा कहता है-तुम जो कार्य कर रही हो उसमें कोई सफलता ही नहीं है तो उसे कार्य करने में क्या लाभ है?सिर्फ तुम दिखावा ही कर रही हो.तभी चिड़िया कहती है-जब इसके बारे में इतिहास लिखा जाएगा,तो मेरा नाम आग बुझाने में लिखा जाएगा न कि आग लगाने में,मैं जैसे भी हूँ| लोगों के साथ में हूँ|कौवा उनकी बातों को सुनकर शर्मिंदा होकर,वहां से उड़ गया.गांव वाले उनकी बातों को सुनकर सभी लोग आवाक रह गए और उस नन्ही चिड़िया के प्रयास की सरहाना करने लगे.

बच्चों चिड़िया की इस प्रयास से हमें यह शिक्षा मिलती है कि चाहे जितनी भी मुश्किल क्यों ना हो, हमें अपनी हिम्मत और होंसले को बनाए रखते हुए अपने प्रयास करते रहना चाहिए.अंत में निश्चित ही सफलता प्राप्त होती है.

कुमारी दुर्गावती कक्षा छठवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पम्पानगर जिला –सूरजपुर द्वारा पूरी की गई कहानी

कौवा सोचता है कि जब एक छोटी सी चिड़िया आग बुझाने जैसा जोखिम वाला काम कर सकती है तो फिर मैं क्यों नहीं कर सकता मैं तो उससे बड़ा हूं फिर वह चिड़िया और गांव के सब लोगों के साथ मिलकर आग बुझाने लगता हैं। उन्हें ऐसा करते देखकर जंगल के और पशु - पक्षी भी अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार पानी लाकर आग में डालने लगे। इस तरह देखते ही देखते कुछ ही समय में पूरी आग बुझ जाती है गांव वाले सभी पशु एवं पक्षियों को उनकी मदद करने के लिए धन्यवाद देते हैं और साथ ही बहुत सारे अनाज और फल फूल उपहार में देते हैं और आगे जब भी उन्हें जरूरत पड़ी वे उनके भोजन और पानी की व्यवस्था कर देते। और फिर सभी हमेशा इसी तरह एक दूसरे की मदद करते हुए खुशी-खुशी रहने लगते हैं।

सीख - इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमारे छोटे-छोटे कार्य भी बड़े और सकारात्मक परिवर्तन ला सकते हैं।

कु.कुसुमलता यादव कक्षा – सातवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पम्पानगर विकासखंड –रामानुजनगर द्वारा पूरी की गई कहानी

फिर कौवे ने सोचा मुझे चिड़िया और गांव वालों की मदद करनी चाहिए। कौवा हाथी से मदद मांगने के लिए जंगल की ओर चला गया और हाथी के पास जाकर बोला - हाथी दादा हमारी मदद करो। गांव में आग लग गई है। हाथी ने बिना देरी किए उनकी मदद करने के लिए हामी भर दी और उनके साथ हो लिया हाथी नदी के पास गया और अपनी सूंड में पानी भर भरकर आग में डालने लगा और देखते ही देखते पूरी आग बुझ गई। गांव वालों ने चिड़िया, कौवे और हाथी को धन्यवाद तो दिया ही साथ ही और ढेर सारे फल, अनाज और कई अन्य उपहार भी दिए फिर क्या था। सब लोग खुशी-खुशी एक परिवार की तरह रहने लगे। और आगे से जब भी कोई मुसीबत आती सब एक दूसरे का साथ देते। उन्हें समझ आ गया था कि मुसीबत में एक दूसरे का साथ देना चाहिए और हर मुसीबत का डटकर सामना करना चाहिए।

सबक - कोई भी मुसीबत आने पर हमें घबराना नहीं चाहिए उसे खत्म करने का प्रयास करना चाहिए और हमेशा एक जूट होकर काम करना चाहिए।

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

पुराने समय में एक राजा युद्ध में हार गया था। उसके सभी सैनिक मारे जा चुके थे। राजा किसी तरह अपनी जान बचाकर जंगल में भाग गया। सैनिक उसका पीछा कर रहे थे। वह बचने के लिए एक गुफा में छिप गया।

सैनिक राजा को जंगल में खोजते-खोजते उस गुफा तक पहुंच गए। गुफा के अंदर राजा को ढूंढा, लेकिन सैनिक उसे ढूंढ नहीं सके। बाहर आकर सैनिकों ने बड़े-बड़े पत्थरों से गुफा बंद कर दी।

गुफा बहुत गहरी थी। अंदर की ओर राजा छिपा हुआ था। वह काफी थक चुका था। भूख-प्यास की वजह से बेहाल हो रहा था। उसके शरीर में ताकत भी नहीं बची थी।

शत्रु सैनिक गुफा बंद करके वहां से चले गए तो राजा अंदर बैठा-बैठा सोच रहा था कि अब तो उसका जीवन खत्म हो गया। वह गुफा से कभी बाहर नहीं निकल पाएगा। राजा निराश हो चुका था। तभी उसे मां की एक बात याद आई।

इसके आगे क्या हुआ होगा? कहानी को पूरा कीजिए और यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए. चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं–

संतोष कुमार कौशिक शिक्षक शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय ककेड़ी जिला-मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

कर भला

एक नदी के किनारे एक पेड़ था.उस पेड़ के जड़ो के नीचे एक चींटी रहती थी. उस पेड़ के ऊपर ही एक घोसला बना कर एक कबूतर भी रहता था. एक दिन की बात है.चींटी पानी पीने के लिए नदी की ओर गई.नदी में एका-एक बहाव उठा और चींटी पानी में डूबने लगी. चींटी अब डूब कर मरने वाली ही थी.तभी कबूतर की नजर उस चींटी पर गई.कबूतर ने पेड़ से एक पत्ते को तोड़कर नदी में उस स्थान पर गिराया,जहॉ चींटी डूब रही थी.चींटी पत्ते पर चढ़ा.उस पत्ते को कबूतर ने अपनी चोंच से उठाकर उसे पेड़ के पास ले गया,जहाँ वे दोनों रहते थे.चींटी की जान बच गई.उसे अपनी जान बचाने पर कबूतर को धन्यवाद दिया और कहा-कबूतर भैया,इस एहसान का बदला एक दिन मैं जरूर चुकाऊँगी. उनकी बातों को सुनकर कबूतर हंसते हुए कहा- तुम छोटी सी चींटी,मेरा जान कैसे बचा पाओगी.चींटी ने उसे कुछ नहीं कहा और वे दोनों अपने-अपने काम पर लग गये.

कुछ समय पश्चात एक शिकारी उस पेड़ के पास आया.पेड़ की डाल पर कबूतर बैठी थी.उसे देखकर शिकारी ने अपने बंदूक से उस पर निशाना साधा.कुछ ही छड़ पश्चात कबूतर को मारने वाला ही था.तभी शिकारी को चींटी ने देख लिया.चींटी के लिए यह ऐसा समय था.जब अपने जान पर खेल कर कबूतर की मदद किया जाए.

चींटी जल्दी से शिकारी के पास जाकर शिकारी के पैर में काट लिया.चींटी के काटने से शिकारी का निशाना चूक गया.बंदूक की गोली कबूतर को न लगकर पेड़ के एक डाली को स्पर्श करते हुए निकल गई.कबूतर जल्दी से वहाँ से उड़ गया.इधर शिकारी के पैर काटने के पश्चात चींटी अपने बिल में घुस गई.

शिकारी यह सब कुछ देखता ही रहा.उसे कुछ नहीं मिला और वह अपना घर चला गया.शिकारी के घर जाने के बाद वह कबूतर चींटी के पास आकर चींटी को धन्यवाद दिया और चींटी को छोटा समझकर उसके अंदर अहंकार की भावना थी वह दूर हुआ. चींटी से उसने क्षमा याचना किया.इसके बाद वे दोनों अच्छे दोस्त बन गए.

बच्चों इस कहानी से हमें सीख मिलती है कि अपने से छोटे जीव का अनादर,कबूतर की तरह नहीं करना चाहिए.न जाने कब कौन,किसका काम आ जाए?और इस कहानी से यह भी शिक्षा मिलती है कि अगर हम किसी का निःस्वार्थ भाव से मदद करते हैं.तो दूसरों पर किया हुआ उपकार कभी व्यर्थ नहीं जाता.उसका प्रतिफल कभी ना कभी अवश्य प्राप्त होता है.
कहा गया है कि-"कर भला,तो हो भला."
इस कारण हमें दूसरे की मदद जरूर करनी चाहिए.

श्रीमती सुनीता सिंह राजपूत शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला कंतेली जिला बेमेतरा छत्तीसगढ़ द्वारा पूरी की गई कहानी

मदद

एक जंगल में दो कबूतर पक्षी की जोड़ा रहता था। कबूतर पक्षी की जोड़ा अपनी जीवन खुशी खुशी से बिता रहे थे एक दिन की बात है, जंगल में बहुत तेज आंधी चलने लगी। आंधी के साथलगी होने भी बारिश साथ-। उसी समय नर और मादा कबूतर देखते हैं कि एक चींटी पानी की तेज बहाव में बहते हुए जा रही थी, तभी नर कबूतर ने मादा कबूतर से कहा कि इस चींटी की हमें रक्षा करना चाहिए और बहते हुए पानी से इसे बचाना चाहिए। तुरंत ही ही मादा कबूतर ने नर कबूतर को मादा कबूतर ने चींटी को बचाने के लिए भेज दी। नर कबूतर ने एक पत्ते की सहायता से चींटी को बचाने लग गई,। इधर मादा कबूतर अपने घोंसले में चुपचाप बैठी थी। उसी समय शिकारी शिकार करने के लिए जंगल में आया। और देखते ही देखते शिकारी मादा कबूतर के ऊपर बंदूक चलाने लगा और मादा कबूतर घोसला से निकालकर फड़फड़ाने लगी। मादा कबूतर जोरकर चिल्ला से जोर- नर कबूतर को चिल्लाने लगी बचाओ बचाओ शिकारी हमें करने के लिए आया है। उधर नर कबूतर जैसे तैसे पेड़ के पत्ते की सहायता से चींटी को बचाने में सफल हुए। तभी शिकारी ने देखा कि एक पक्षी होकर भी कबूतर ने चींटी को बहते हुए पानी से बचा लिए फिर तो मैं एक इंसान हूं इंसान होकर भी मैं निर्दोष पक्षियों को मार रहा हूं मुझे बहुत बड़ी भूल हो गई है शिकारी ने कहा मैं अपनी गलतियों का प्रायश्चित करूंगा भविष्य में कभी भी निर्दोष पशु पक्षियों को नहीं मारूंगा। मुझे भी इन कबूतरों को नहीं मारना चाहिए क्योंकि यह एक पक्षी होकर भी एक डूबते हुए चींटी को सहारा देकर बचा लिया है तो मैं तो एक इंसान हूं। यह सब देखने के बाद शिकारी को अपनी गलती का एहसास हुआ और शिकारी जंगल से वापस अपने घर की ओर चले गए, दोनों कबूतर की जोड़ी फिर से उसी पेड़ की घोसले में सुख पूर्वक जीवन बिताने लगे।
सीख :- इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें कभी भी निर्दोष पशु पक्षियों को नहीं मारना चाहिए हमेशा मदद करना चाहिए। हम मनुष्य होकर भी बिना सोचे समझे गलती कर देते हैं इसलिए हमें भी बेजुबान पशु पक्षियों से सीख लेना चाहिए। ।

कुमारी नीमा दास कक्षा सातवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पम्पानगर जिला सूरजपुर छत्तीसगढ़ पूरी की गई कहानी

शिकारी

एक जंगल में एक कबूतर रहा करता था। वहीं पास के गांव में एक शिकारी रहता था। कबूतर एक पेड़ में रहता था। वहीं पेड़ के बगल से एक नदी बहती थी। एक दिन उसने देखा कि एक रानी चींटी उस नदी में गिर गई है और बचाओ बचाओ की आवाज लगा रही है। कबूतर ने उसकी मदद करने की सोची। उसने पास में ही पड़े एक सूखे पत्ते को ले जाकर रानी चींटी के आगे डाल दिया और रानी चींटी को उस पर चढ़ने बोला रानी चींटी जैसे तैसे कर के उस पत्ते पर चढ़ तो गई। लेकिन रानी चींटी थककर बेहोश हो गई थी। उसने हिला डुला कर देखा तो उसकी सांसे चल रही थी। कबूतर को लगा कि अब उसकी जान बच जाएगी कबूतर ने चींटी की अच्छे से देखभाल की और वह कुछ दिनों में ही बिल्कुल ठीक हो गई और अपने घर चली गई। कुछ दिन बाद एक शिकारी जंगल में आया उसे देखकर सभी पक्षी अपनी जान बचाकर भागने लगे। फिर वह कबूतर जिसने रानी चींटी की सहायता की थी वह भी एक पेड़ के झुरमुट में अपनी जान बचाने छुप गया था उसे छिपते हुए शिकारी ने देख लिया और कबूतर की तरफ अपना निशाना साध दिया। तभी रानी चींटी वहां से गुजर रही थी उसने देखा कि जिस कबूतर ने उसकी जान बचाई थी आज उसकी जान खतरे में है उसने बिना देरी किए शिकारी को सबक सिखाने की सोची। वह उस शिकारी के ऊपर चढ़ गई और जोर जोर से काटने लगी शिकारी लहू लुहान हो गया और भाग खड़ा हुआ। इस तरह कबूतर की जान बच गई। कबूतर ने रानी चींटी को धन्यवाद दिया। कबूतर ने कहा कि अब हम दोनों सच्चे मित्र हैं एक दिन तुमने मेरी जान बचाई थी और आज मैंने तुम्हारी जान बचाई है इसमें धन्यवाद की क्या जरूरत है मित्र। हिसाब किताब तो बराबर हो गया और इस तरह रानी चींटी और कबूतर अच्छे और सच्चे मित्र बनकर खुशी-खुशी रहने लगे।

सीख - इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें जरूरतमंदों की मदद करनी चाहिए।

आराध्या सिंह साधुराम विद्या मंदिर सूरजपुर जिला सूरजपुर छत्तीसगढ़ पूरी की गई कहानी

चींटी और कबूतर

एक कबूतर था उसने बहुत मेहनत करके तिनका तिनका जोड़कर घोंसला बनाया था और उसमें अंडे दिए थे। कुछ समय के बाद उन अंडों में से बच्चे निकल आए। जंगल में अक्सर एक शिकारी आता था जो पशु पक्षियों का शिकार करता था जंगल में सभी उस शिकारी के आतंक से भयभीत रहते थे। उन्हें समझ में नहीं आ रहा था कि कैसे इस शिकारी से निजात पाएं। उन्होंने कई अन्य जानवरों से इस विषय पर चर्चा की परंतु कोई भी समाधान निकलता दिखाई नहीं दे रहा था तब उन्हें रानी चींटी की याद आई वह बहुत दयालु थी और सब की मदद किया करती थी सभी उससे मदद मांगने जाया करते थे कबूतर ने भी उससे मदद मांगने की सोची कबूतर चींटी के पास जाकर बोला बोला रानी चींटी मैं बहुत बड़ी मुसीबत में हूं कृपया मेरी मदद करो वरना मेरे बच्चों को वह शिकारी मार डालेगा रानी चींटी को कबूतर पर दया आ गई उसने उसकी मदद के लिए हां कर दी फिर उन्होंने उस शिकारी को सबक सिखाने की योजना बनानी शुरू की रानी चींटी का घर कबूतर के घोंसले वाले पेड़ से काफी दूर था चींटी पैदल चलकर आती तो काफी समय लग जाता और कबूतर के बच्चों पर हर पल खतरा मंडरा रहा था चींटी के घर के पास से एक नदी बहती थी जो उसे पेड़ से होकर गुजरती थी कबूतर ने पेड़ से एक पत्ता तोड़ा तथा उसे उस पर बैठने को कहा और पत्ते की नाव बनाकर उसने उसे नदी में बहा दिया कुछ ही टाइम में वे उसे पेड़ के पास पहुंचे कबूतर ने चींटी को नदी से बाहर निकाला उन्होंने देखा की शिकारी उसके बच्चों पर निशाना साधे हुए खड़ा है कबूतर का इशारा पाते ही रानी चींटी उसके ऊपर चढ़ गई और उसे काटने लगी और शिकारी का निशाना चूक गया और वह लड़खड़ाकर नदी में जा गिरा। नदी गहरी थी उसे तैरना नहीं आता था। वह बहकर बहुत दूर चला गया और उसे काफी चोंटे भी आई उसने दोबारा पक्षियों का शिकार न करने की कसम खा ली और दोबारा उस जंगल में कभी नहीं लौटा। सभी पशु पक्षी जंगल में खुशी-खुशी रहने लगे।
सीख - इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें किसी को कमजोर नहीं समझना चाहिए और कभी भी कमजोरों पर वार नहीं करना चाहिए।

कुमारी कुसुमलता यादव कक्षा सातवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पम्पानगर जिला सूरजपुर (छत्तीसगढ़)

कबूतर और चींटी

सोनपुर गांव में एक शिकारी रहता था वह हमेशा जानवरों और पक्षियों का शिकार करता था। जंगल के जानवर और पक्षी उससे बहुत डरते थे। उसी गांव के पास एक घना जंगल था उस जंगल में कई प्रकार के जानवर रहते थे एक दिन एक कबूतर भोजन की तलाश में उड़ रहा था उसने एक चींटी को पानी में बहते हुए देखा वह बचाओ बचाओ चिल्ला रही थी। तभी कबूतर ने सोचा मुझे इस चींटी की मदद करनी चाहिए। उसने एक पेड़ के पास से एक सूखी पत्ती उठाई और चींटी के सामने रख दिया चींटी पत्ते पर चढ़ गई कबूतर ने चींटी को पानी से बाहर निकाला। वह भीग गई थी और ठंड से कांप रही थी कबूतर ने चींटी को अपने पंखों के नीचे छुपा कर उड़ते हुए उसके घर पर छोड़ दिया और उसकी हर संभव देखभाल की। अब चींटी और कबूतर के बीच मित्रता हो गई थी दोनों जंगल में खुश थे। तभी एक दिन वह खतरनाक शिकारी शिकार करते-करते जंगल में पहुंचा। जंगल के जानवर व पक्षी घबराकर इधर-उधर छिपने लगे। तभी शिकारी की नजर कबूतर पर पड़ी वह कबूतर पर निशाना लगाकर तीर चलाने ही वाला था तभी चींटी ने शिकारी को देखा उसने सोचा यह शिकारी मेरे मित्र का शिकार करने वाला है उसने बिना वक्त गंवाए शिकारी के पैर को जोर से काटा। शिकारी का निशाना चूक गया और कबूतर बच गया। कबूतर ने चींटी को धन्यवाद दिया। शिकारी दर्द के मारे कराहने लगा और भाग गया और जंगल में कभी वापस नहीं आया। इस तरह कबूतर और चींटी खुशी-खुशी रहने लगे।

सीख- इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें अपने मित्र की हमेशा मदद करनी चाहिए सच्चा मित्र वही होता है जो मुसीबत के समय अपने मित्र की सहायता करता है।

कुमारी दुर्गावती कक्षा छठवीं शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला पम्पानगर, रामानुजनगर जिला - सूरजपुर

मदद

एक जंगल में एक शिकारी रहता था। उसी जंगल में एक चिड़िया रहती थी। एक दिन शिकारी अपने शिकार की तलाश में निकल पड़ा। और वह जंगल में यहां वहां शिकार की तलाश में भटकने लगा। दूसरी तरफ तालाब के किनारे पेड़ पर कबूतर बैठी थी कबूतर ने देखा कि एक छोटी सी चींटी पानी में डूब रही है और मदद के लिए गुहार लगा रही है चिड़िया की नजर चींटी पर गई चिड़िया ने सोचा कि यदि मैंने अभी इस कबूतर को नहीं बचाया तो वह पानी में डूब कर मर जाएगी। कबूतर ने मन ही मन सोचा मुझे चींटी को बचाना चाहिए। फिर कबूतर ने पेड़ की डाल से एक पत्ता तोड़कर पानी में फेंक दिया। और चींटी को पत्ते पर चढ़ने को बोली और जैसे ही चींटी पत्ते पर चढ़ गई कबूतर ने पत्ते को चींटी सहित किनारे पर लगा दिया और चींटी की जान बच गई तभी चींटी ने देखा कि एक शिकारी कबूतर पर बंदूक ताने खड़ा है चींटी ने सोचा कि कबूतर ने आज मेरी जान बचाई है वरना मैं नहीं बच पाती अब जान बचाने की बारी मेरी है मैं भी उसे बचाऊंगी। चींटी इतना सोचते बिना देरी किए शिकारी के पैर पर चढ़ गई और फिर शिकारी को काटने लगी तभी शिकारी छटपटाने लगा और भाग गया और वह दोबारा कभी नहीं लौटा इस तरह कबूतर और चींटी दोनों बहुत अच्छे मित्र बन गए और हंसी-खुशी रहने लगे।

सीख - इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि हमें जरूरतमंदों की हमेशा मदद करनी चाहिए।

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिखकर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल : kilolmagazine@gmail.com पर अगले इस माह की 15 तारिख तक भेज दे आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

बाल कविता

गर्मी का मौसम

रचनाकार:- हिमकल्याणी सिन्हा, शासकीय प्राथमिक शाला- सैगोना,साजा जिला -बेमेतरा

आ रहा गर्मी का मौसम, कहा भाग कर अब जाओगे |

सब मिलकर पेड़ लगाओ, गर्मी से ठंडक तुम पाओगे |

जीव जंतु का रखना ध्यान, गर्मी में होते सभी हलाकान |

पेड़ो के बिना धरती सुना लगते, पक्षी भी आश्रय नहीं पाते है |

सूरज की तपन सह नहीं सकते, अपनी पीड़ा कह नहीं सकते |

आओ मिलकर कदम बढ़ाये, पेड़ लगाए ऑक्सीजन पाये |

हर मौसम को खुशहाल बनाये, सेवा भाव की अलख जगाये |

धरा को स्वर्ग बनाये,
मिलजुल कर पेड़ लगायें |

छुट्टी का दिन

रचनाकार :- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान गोरखपुर उ. प्र.

परीक्षा का दिन बीत गया,
सब बच्चों ने रिजल्ट पाया।
कोई फस्टडिवीजन,
कोई स्कूल में टाप आया।

पास होने की खुशी में
सबने एक दूसरे को मिठाई खिलाया।
पापा मम्मी खुश हो गए
बच्चों का मन हर्षाया।

छुट्टी का दिन आ गया
चेहरे पर हंसी नजर आया।
पिकनिक पर जाने का
सबका मन हो आया।

आइसक्रीम वाला

रचनाकार :- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान गोरखपुर उ. प्र.

गर्मी का दिन आ गया
आइसक्रीम वाला आया।
ले कर अपना ढेला गाड़ी
गली गली में शोर मचाया।

निकलपड़े बच्चें सब घर से
पैसे लेकर कर सारे।
खाने लगे आइसक्रीम लेकर
मन चाहे और प्यारे प्यारे।

काजू बादाम और खोवा वाला
पिस्ता किसमीस वाला लाया।
जिसको जो पसंद आया
वही खरीद कर खाया।

अब तो गर्मी भर हम रोज आइसक्रीम खाएंगे।
अपने गले की प्यास रोज हम बुझाएंगे।

खुशियों की

रचनाकार :- प्रिया देवांगन राजिम जिला गरियाबंद

रंग प्रीत की सज गई आज। है खुशियों की होली।।

उड़े गगन में तितली जैसे, मंजुल दिखे नजारे।
रंग देख पुलकित हैं सारे। करते हँसी ठिठोली।।

पायल मेरी शोर मचाती, नयना काजल आँजे,
राह ताकती तेरी साजन, यौवन तुझसे साजे,
हिय तरसे बातें सुनने को, मधुरस तेरी बोली।।

सतरंगी नभ छटा बिखेरी, चली आज पिचकारी।
रक्तिम से दिखते कपोल सब, हो कारी या गोरी।।
प्रीत रगों में घुला आज जस, दूध भांग की गोली।।

व्याकुलता मन में छाई है, अगन लगी है काया,
करो स्वप्न साकार आज तुम, अवसर है यह आया।।
आओ साजन! रंग लगाओ, भीगे मेरी चोली।।
खुशियों की होली। खुशियों की होली।।

गिनती

रचनाकार :- सुधारानी शर्मा मुंगेली

बोलो बच्चो एक, अब तुम खाओ केक।
बोलो बच्चो दो, हाथों को अब धो।
बोलो बच्चो तीन, कंकण, गुटटे बीन।
बोलो बच्चो चार, जाएंगे बाजार।
बोलो बच्चो पांच, नहीं सांच को आंच।
बोलो बच्चो छह, भारत माता की जय।
बोलो बच्चो सात, सब बढ़ाओ हाथ।
बोलो बच्चो आठ, जल्दी सीखो पाठ।
बोलो बच्चो नौ,सदा यशस्वी भव।
बोलो बच्चो दस, हो गई गिनती बस।

परीक्षा और पढ़ाई

रचनाकार :- श्रीमती विभा सोनी शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला जांजी बिलासपुर छत्तीसगढ़

पढ़ना जरूरी है, मेहनत जरूरी है।
परीक्षा का समय है,घबराना नहीं है |

रखना सावधानी, डर जाना नहीं हैं।
परीक्षा का समय है,पढ़ना जरूरी है।

ना करें कामचोरी, करते रहे अभ्यास |
लगन व मेहनत कर,पाए हर खिताब |

दिन-रात एक कर, साकार करें सपने |
लड़ते रहे डरो से,आगे बढ़े सबसे |

ना हो हताश न हो उदास|
मेहनत का फल मिलता है खास।

पढ़ना जरूरी है, मेहनत जरूरी है।
परीक्षा का समय है,घबराना नहीं है |

होली रे होली

रचनाकार :- डॉ. दीक्षा चौबे आदित्यनगर दुर्ग छत्तीसगढ़

होली रे होली है आई। मस्तानों की टोली आई।।

लाल हरा गुलाल हाथ लिए, पिचकारी अपने साथ लिए।
भीगें और भिगाएँ सबको, गुझिया खीर खिलाएँ सबको।
स्वाद निराले हर व्यंजन के, दहीबड़े मन सबके भाई।।
होली रे होली है आई।।

ढोल नगाड़े दिन भर बजते, बाजार मुखौटों से सजते।
कच्चे पक्के रंग लगे हैं, हँसी कहीं हुड़दंग जगे हैं।
गले मिलें सब प्रेमभाव से, साथ खुशी हमजोली लाई।।
होली रे होली है आई।।

झूमे नाचें दे-दे ताली, देंगे नहीं किसी को गाली।
कितना सुंदर पर्व हमारा, इससे बढ़ता भाईचारा।
चोट नहीं लग जाये देखो, रंग पर्व की तुम्हें बधाई।।
होली रे होली है आई, होली रे होली है आई|

गौरैया

रचनाकार :- राधेश्याम सिंह बैस शास प्राथ शाला मगरघटा (नवागढ़)बेमेतरा

कितनी सुन्दर सुन्दर,
सबकी गौरैया प्यारी।
श्वेत रंग की पंखो वाली,
जन-जन की पक्षी न्यारी।

घर आँगन पर खेलती,
फुदक -फुदक कर चलती।
छत मुंडेर पर चहचाती,
पग मे मदमस्त मचलती।

चिड़ियों की कलरव राग से,
चहकती निश दिन सबेरा।
इस जगह से उस जगह,
उड़ती चलती छोड़ बसेरा।

बनाता घरों पर बसेरा,
वह होता इनका संसार।
चूँ -चूँ करती रहती नित,
दीवारों के इस और उस पार।

चोंच घुमाती तेजी से,
आँखों की चंचलता सी।

अगल -बगल घूमती रहती,
दाना चुगती सरलता सी।

संगीतमय आवाजो से,
ध्यान खींचती है सहज।
होती आवाजो मे जादू,
उड़ जाती पल -पल महज।

वर्ष बीत गये देखे उनको,
लगता बन जाये न इतिहास।
आओ मिलकर करें रक्षा,
फिर गौरैया आने का विश्वास।

दिखती न उनकी घोषले,
सुनने तरस गये आवाज।
खिड़कियों की होती शोभा,
करें आसियाना बुनने का काज।

घर आँगन द्वार सब जगह,
बिन सुनी खाली लगती है।
फुदकना न कलरव न कुछ,
न रहने से न प्रकृति सजती है।

मिलकर हम सब करें प्रयास,
गौरैया पक्षी का संरक्षण।
घर आँगन मे जगह दिलाये,
जिसमे बनी रहे आकर्षण।

प्रयास कर

रचनाकार :- देवप्रिया साहू कक्षा – 8 वीं स्वामी आतामानंद स्कूल राजिम जिला गरियाबंद

तेरे गिरने में,तेरी हार नहीं।
तू आदमी है, अवतार नही।
गिर,उठ,चल,दौड़,फिर खड़े हो |
जीत संक्षिप्त है, इसका कोई सार नही।

अथक परिश्रम करते रहना |
तुम कभी हार ना मनना,।
अगर गलती से गिर भी गए |
शुरुआत करने से कभी न कतराना।

हर हार में तेरी जीत है|
कोशिश करना न छोड़ा।
अब फिर उठ और प्रयास कर |
जैसे दौड़ में थकता नहीं है घोड़ा। ।

चलता चल

रचनाकार :- गजानंद प्रधान शिक्षक मा.शाला गाड़ापारा सरिया, बरमकेला जिला सारंगढ़ बिलाईगढ

नदियों की धार, साहस अपार |
अतुलित बल, जल वायु और अनल |

शक्ति का प्रवाह, हिम्मत अथाह |
सूर्य सा सतत, चलता चल बहता। ।

शक्ति देश का, साक्ष्य इतिहास है |

जो रहे संगठित, विश्व तेरा दास है |

रुकना न जानता, झुकना न जानता |
जब तक न लक्ष्य मिले, थकना न जानता |

बढ़े जैसे समय चक्र, बढ़ता चल अनवरत |
चलता चल अनवरत, बहता चल अनवरत।।

चाहे हर संकट, का हल निकाल दे |
मरुथल से तू चाहे, तो जल निकाल दे |

स्वेद तेरा स्याही, रचता इतिहास है|
जिधर चले, उधर चलता इतिहास है|

विवेकानंद भगत सिंह, तू ही है देवव्रत |
चलता चल अनवरत, बहता चल अनवरत।।

नवयुग निर्माण का, तू क्रांतिवीर है|
चुके न लक्ष्य से, ऐसा एक तीर है|
मातृभूमि की खातिर, देता बलिदान है|
रक्षक है देश का, तुझसे ही शान है|

बहे जैसे पुरवाई, बहता चल अनवरत |
चलता चल अनवरत, बहता चल अनवरत |

झाँसी की रानी

रचनाकार :- कु भूमिका सोनकर कक्षा – 9 वीं सेजेस राजिम जिला गरियाबंद छत्तीसगढ़

मराठा परिवार में जन्म लेकर, जिसने तलवार चलायी थी।

बचपन में नाम था मनु, बाद में बड़ा नाम कमाई थी।

पिता के सिर को ऊंचा कर, जिसने महिलाओं को अधिकार दिलाया |

झांसी के राजा संग, ब्याह रचा कर रानी का पद उसने पाया,
पति के जाने का दुःख पाया |

अंग्रेजों से लड़कर जिसने, वह सहन ना कर पायी थी।

भारत के लिए आजादी, की पताका फहराई थी।

अंग्रेजों के हाथों मरने, स्वयं को आग में जलायी थी।

आखिरी दम तक जिसने लड़ाई की,
वह भारत में आजादी की मशाल ले आयी थी।
औरत होकर जिसने, हिम्मत इतनी दिखलाई थी।
वही तो झांसी की रानी, लक्ष्मीबाई कहलाई थी।

छोटा भैया

रचनाकार :- सुधारानी शर्मा मुंगेली छत्तीसगढ

मेरे छोटे राजा भैया, बोलो क्यों रोते हो ?
मुझको बताओ, कुछ ना छुपाओ |
मम्मी को बतला दूं क्या ? पापा को समझा दूं क्या ?
लोरी तुम्हें सुना दूं क्या ? मोटर गाड़ी दिलवा दूं क्या ?
मेरे छोटे राजा भैया, बोलो क्यों रोते हो ?
परियों को बुला दूं क्या? जादू का खेल दिखा दूं क्या?
डम डम ढोल बजा दूं क्या ? मोर का नाच दिखा दूं क्या ?
मेरे छोटे राजा भैया, बोलो क्यो रोते हो ?
कपड़े नये दिला दूं क्या? आइसक्रीम खिला दूं क्या?
होमवर्क करवा दूं क्या? कार्टून तुम्हे दिखा दूं क्या?
मेरे छोटे राजा भैया, बोलो क्यों रोते हो ?

फलो का महत्व

रचनाकार :- सुधारानी शर्मा मुंगेली

सारे फलो को खाना है,
जीवन स्वस्थ बनाना है |
बीमारी दूर भगाना है,
फलो का महत्व बताना है |

आम है फलों का राजा,
सेब खाओ ताजा-ताजा।
अंगूर को भूलो मत,
केले से मिलती ताकत।
संतरा है गुणो की खान,
अमरुद सभी फलों की जान।
पपीता खाएं विटामिन पाए,
जामुन से तो मधुमेह भगाये।
अनार से बढ़ता है खून,
स्वस्थ शरीर से मिले सुकून।

सारे फलों को खाना,
जीवन स्वस्थ बनाना |
बीमारी दूर भगाना है,
फलो का महत्व बताना है |

परिणाम

रचनाकार :- जीवन चन्द्राकर मा. शाला खपरी दुर्ग छत्तीसगढ़

मम्मी मेरे स्कूल का,
आज निकलेगा परीक्षा परिणाम।
विश्वास करो,सबसे ऊपर,
जरूर रहेगा मेरा नाम।
सभी विषय मे,सभी प्रश्नों को,
मैंने ठीक-ठाक बनाया है।
कुछ नम्बर ही कट पायेगा,
मैंने, अनुमान लगाया है।
सभी पेपर में लिखा हूँ,
शब्दों को सुंदर और साफ।
जांचेगा जो पेपर मेरा,
करेगा मुझ पर पूरा इंसाफ।
शत प्रतिशत किया है मैंने,
हर पेपर में अपना काम।
विश्वास करो न,मेरी मम्मी,
आएगा बहुत उत्तम परिणाम।

तोता

रचनाकार :- जीवन चन्द्राकर मा. शाला खपरी दुर्ग छत्तीसगढ़

पिंजरे में एक तोता है,
जो कभी न चुप होता है।
लेते रहता है, सबका नाम।
सबको करता, जय श्रीराम।
खाता है नित, मिर्ची लाल।
फिर पिंजरे में करे धमाल।
पंखों को खूब फड़फड़ाता है,
जोर जोर से चिल्लाता है।
न थकता है, न सोता है।
पिंजरे में जो तोता है।

लँगूर

रचनाकार :- जीवन चन्द्राकर मा. शाला खपरी दुर्ग छत्तीसगढ़

मंदिर में है जो एक लंगूर,
उत्पाती है जो भरपूर।
थाली में फल दिख जाता है।
सबको छीनकर वो खाता है।
गर मिलती है उसको डांट।
दिखलाता है नुकीले दांत।
दूर नहीं वह जाता है।
पास पास और आता है।
चाहे जितना उसे डराओ,
फिर भी न जाता है दूर।
मंदिर में है जो एक लंगूर।

खुशी

रचनाकार :- श्रीमती रेणुका अग्रवाल, बेमेतरा

खुशी का माहौल है छाया,
आज जन्मदिन है मेरा आया |

पापा मम्मी दीदी भैया,
सब ने दी बधाइयां |

यूं ही नहीं बड़े प्रेम है करते,
देते आशीष जी भर के |

चाचा चाची ने खिलाई मिठाइयां,
पप्पू टिंकू ने भी दी बधाइयां |

कितनी खुशी का माहौल है छाता,
जब घर में किसी का जन्मदिन है आता |

सरस्वती पूजा

रचनाकार :- श्रीमती प्रियंका श्रीवास दरभा, बस्तर

माता सरस्वती हुए उत्पन्न,
दिवस है आज पावन |

माता सरस्वती का आगमन,
घर आंगन हो गया पावन |

आया बसंत मन भावन,
सभी आमो में है मौर लुभावन |

सरस्वती पूजन कर मन है, प्रसन्न,
जीवन हो गया मधुबन।

बचपन

रचनाकार :- श्रीमती नीलीमा पटेल शासकीय प्राथमिक शाला बोईरडीपा, सुर्री पुसौर जिला रायगढ़

बचपन-बचपन मेरे प्यारे बचपन,
बचपन-बचपन मेरे प्यारे बचपन|

कहां गए मेरे बचपन मेरे साथी मेरे यार।
कहां गए मेरे बचपन मेरे साथी मेरे यार।।

भाई बहनों के साथ झगड़ना,
कितना अच्छा लगता था पुस्तक पढ़ना।

मां के आंचल में सुख की छाया थी,
पिता के प्यार का सर पे साया था।

आशा नहीं चुकाना ये कर्ज होता है।
माता,पिता के चरणों में स्वर्ग होता है।।

लगता यही है दुख क्यों बीत गए वो सुख।।
बचपन-बचपन मेरे प्यारे बचपन।

जिंदगी

रचनाकार :- श्रीमती अंजू नायक शासकीय प्राथमिक शाला पुटकापुरी पुसौर जिला- रायगढ़

दर्द का अहसास कराती है,
मुश्किल से लड़ना सिखाती है |

जख्म में मरहम लगाती है,
कठिनाई में लड़ना सिखाती है |

खुशी का अहसास कराती है,
गम को खुशी से छिपाती है |

दिल की धड़कन बताती है,
औरों के काम सुलझाती है |

अकेले रहना आंसुओ को छिपाना,
अपनों को पाकर खुशियाँ दिलाती है |

मोड़ पे साथ निभाती है,
हर राह पे सीख दे जाती है |

तुझसे क्या कहूं मै जिंदगी,
एक पल सहारा बन जाती है

मेहनत

रचनाकार :- श्याम सुंदर साहू प्राचार्य राजिम जिला गरियाबंद छत्तीसगढ़

कोई कैसे नहीं संभलेगा,
सहारा देकर तो देख।
मंजिल तुझे जरूर मिलेगा,
मेहनत करके तो देख।।

कोई कैसे नहीं आएगा,
प्यार से बुलाकर तो देख।
सफलता तेरे पास आएगा,
मेहनत करके तो देख।।

कोई कैसे ठोकर खाएगा,
हाथ बढ़ा कर तो देख।
लक्ष्य तुझे मिल जाएगा,
मेहनत करके तो देख।।

कोई कैसे नहीं मानेगा,
प्यार से मना कर तो देख।
हर ख्वाब तेरा पूरा होगा,
मेहनत करके तो देख।।

कोई कैसे नहीं समझेगा,
प्यार से समझा कर तो देख।
हर काम तेरा सुलझेगा,
मेहनत करके तो देख।।

होली

रचनाकार :- श्रीमती प्रियंका श्रीवास दरभा, बस्तर

होलिका का संहार,
हिरण्यकशिपु का उद्धार |
प्रहलाद पर परोपकार,
होली का त्यौंहार।

संघर्ष हुआ साकार,
प्रभु के दर्शन साक्षात्कार |
भगवान की लीला अपरम्पार,
होली का त्यौंहार।

छाया खुशी बेशुमार,
लोगों में बढ़ता प्यार |
नफ़रत जाती हार,
होली का त्यौंहार।

रंगों की बौछार,
खुशियों कि फुहार |
पलाश में बहार,
होली का त्यौंहार।

व्यंजन बनते हजार,
रंगों से भर जाता संसार।
सबके दिल से निकल
यही पुकार, होली का त्यौंहार।

जीवन में विज्ञान

रचनाकार :- अनिता मंदिलवार सपना अंबिकापुर

दुनिया में एक से एक अजूबा है,
विज्ञान की अनूठी रची हुई माया है |

जिसमें देखा तो संसार है,
आविष्कारों, नवाचारों मेले लगे हैं |

विज्ञान है हमारे जीवन का आधार,
जीवन बदला, जीना आसान हुआ है |

कल्पनाओं को साकार विज्ञान करता है,
हर हकीकत को इंसान आसान करता है |

समीकरण

रचनाकार :- अनिता मंदिलवार सपना अंबिकापुर

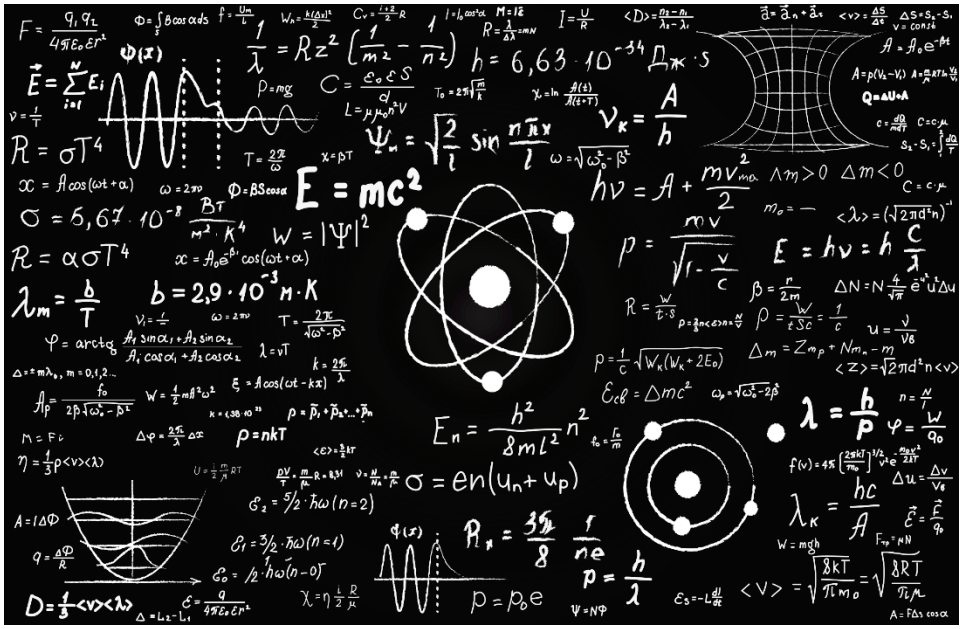

विज्ञान में समीकरण का होता है,
बहुत ही महत्व |

समीकरण संतुलित ना हो तो समीकरण,
गलत हो जाता है |

ठीक उसी प्रकार, जीवन का समीकरण |
अगर बिगड़ जाए तो, जीवन वह नहीं होता |

जो हम चाहते हैं करना, जीवन के समीकरण |
सब रिश्ते सुधर जाएंगे, जीवन हो जाएगा सरल |

खूब लगा

रचनाकार :- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान गोरखपुर उ. प्र.

सूरज लगा आग बरसाने,
पसीना खूब लगा निकलने।
गर्मी का दिन आया फिर,
लगा बदन खूब जलने।

हवा गर्म गर्म बह रही,
लू भी लगा खूब चलने।
धूल भरी आंधी चल रही,
वाह! गर्मी के क्या कहने।

सड़क पर चलना हो मुश्किल,
सड़क जल रहा क्या कहने।
बाग बगीचे कट गए सारे,
लगा प्रदुषण खूब फैलने।

हम गर्मी से कहां बचेंगे,
घर की छत लगा जलने।
सूख गई ताल तलैया,
पानी की किल्लत लगा बढ़ने।

महात्मा बुद्ध

रचनाकार :- गौरीशंकर वैश्य विनम्र विकासनगर लखनऊ

देवि महामाया सुवन, नृप शुद्धोधन तात।
जन्मा शिशु सिद्धार्थ था, लेकर नवल प्रभात।

जन्मे गौतम गोत्र में, पाया गौतम नाम।
मौसी ने पाला उसे, दे ममत्व अभिराम।

बचपन से सिद्धार्थ - मन, था करुणा का स्रोत।
गले लगाया दीन को, प्रेम से ओतप्रोत।

मन में बाद विवाह के, जाग उठा वैराग्य।
त्याग दिया परिवार को, बनी साधना भाग्य।

जरा. रोग और मृत्यु से, उपजा मन में ज्ञान।
सत्य जानने के लिए, किया तपस्या - ध्यान।

बैषाखी पूर्णिमा को, गौतम थे ध्यानस्थ।

'बुद्ध' बने सद्ज्ञान पा, बोधिवृक्ष निकटस्थ।

जोर अहिंसा पर दिया, बलि का किया विरोध।
समझाया दुःख - मुक्ति हित, अष्टांगिक - पथ शोध।

स्वयं तथागत रूप में, त्यागा माया - भोग।
मानवीय सद्कर्म हैं, ध्यान, तपस्या, योग।

पुनर्जन्म का चक्र है, मायावी संसार।
साधन पीड़ा - मुक्ति का, बोधिसत्व आधार।

बुद्ध, धम्म और संघ हैं, बौद्ध धर्म के रत्न।
शिक्षाओं को ग्रहण कर, करें पूर्ति हित यत्न।

जयति महात्मा बुद्ध की, गूँजे देश - विदेश।
मानव के कल्याण हित, मूल्यवान उपदेश।

पाठशाला

रचनाकार :- डॉ सुकमोती चौहान, प्रधान पाठक, शा प्रा शाला बिजराभांठा, बसना

मेरे गाँव की पाठशाला,
खुला जहाँ ज्ञान का ताला |

सखियों संग पैदल स्कूल जाना,
अपने पीठ पर बस्ता लकटाना |

माँ की बनाई खजूर की चटाई में बैठना,
आम की डाली में झूलना झूलाना |

छुप - छुपकर वो कच्ची ईमली खाना,
गुरुजी को आते देख शरीफ़ जाना |

नुकीली पेंसिल, वो सिलेट काला,
मेरे गाँव की वो पाठशाला |

बचपन की वो खट्टी छोड़ना,
गणित न बताने का धौंस जमाना |

पीपल के नीचे इमला लिखवाना,
चिल्ला -चिल्लाकर वर्णमाला पढ़ना |

मेरे गाँव की पाठशाला,
जहाँ खुला ज्ञान का ताला |

फलवाला

रचनाकार :- गौरीशंकर वैश्य विनम्र विकासनगर लखनऊ

अन्नू बोला - दादी देखो!
फलवाला आया है।
खरबूजे - तरबूजे के सँग
पके आम लाया है।

आम मुझे अच्छे लगते हैं
लो खरीद, मैं खाऊँगा।
मम्मी-पापा को भी थोड़े
मैं देकर आऊँगा।

दादी ने समझाया - बेटे!
आम न पके डाल के हैं।
अभी न मौसम हुआ आम का
ये सबके सब पाल के हैं।

पीले - हरे हैं, पिचके - पिचके
मरा - मरा - सा रंग भी है।
कार्बेट में इन्हें पकाते
ऐसा इनका ढंग ही है।

बस थोड़े दिन रुकना होगा
डाल के पके आम आएँगे।
इनमें कोई स्वाद नहीं है,
मीठे - रसवाले खाएँगे।

लट्ठमार

रचनाकार :- श्रीमती प्रियंका श्रीवास बस्तर

बरसाने की लट्ठमार होली
बरसाने की लट्ठमार होली |
न्यौता देने सखियां चली,
जाकर नन्द जी से मिली|

सारा गोकुल खुशी से डोली,
बरसाने की लट्ठमार होली।
यह बात नन्द जी ने वृषभानु जी से बोली,
पुरोहित चले लड्डू लेकर ओली|
राधारानी को सखियों ने लगाई लाली,
बरसाने की लट्ठमार होली।

बनठन के आई ग्वालों की टोली,
रंगों से भरकर लाए है झोली |
सखियों को रंगने की पूरी तैयारी हमजोली,
बरसाने की लट्ठमार होली।

सखियों की सुहावनी बोली,
ग्वालों की आंख मिचौली |
भिगी रंग से सखियों की चोली,
बरसाने की लट्ठमार होली।

मीठी

रचनाकार :- अर्जुन धनंजय सिन्हा शिक्षक आदर्श पूर्व माध्यमिक शाला छुरा,गरियाबंद

सुनो-सुनो ओ प्यारे पापा,
जब भी पड़ूं बीमार |
मत लगवाना सुई मुझे तुम,
देना ऐसा उपचार |

कड़वी गोली से डरता हूं,
सीरप भी नहीं पीनी है |
मेरे मन को भाए ऐसे,
मीठी गोली लेनी है |

मीठी गोली मुझको भाए,
बीमारी को दूर करे |
ठीक उसे खाकर हो जाता,
ऊर्जा भी भरपूर भरे |

राम नवमी

रचनाकार :- गरिमा बरेठ कक्षा- नवमी

राम भक्ति की बहती धार है, राम नाम मोक्ष का द्वार है।
अयोध्या जिनका धाम है, श्री राम उनका नाम है।

रहते जिनकी भक्ति में, हम लिन सुबह और शाम है।
वह महान पुरुषोत्तम, प्रभु श्री राम है।

वह तो स्वयं भगवान था, पर कहां उसमें मान था।
क्रोध को जिसने जीता है, जिसकी भार्या सीता है।

किरदार भी ऐसा चुना, जिसमें सिर्फ बलिदान था।
भरत, शत्रुघ्न, लक्ष्मण के भाई हैं हनुमान लला जिनके चरण पाई है

राम भक्ति की बहती धार है, राम नाम मोक्ष का द्वार है।
अयोध्या जिनका धाम है, वह प्रभु श्रीराम है।

प्यारे पंछी

रचनाकार :- अशोक पटेल तुस्मा,शिवरीनारायण (ग छ)

पानी को तलाश रहे, ये प्यारे पंछी,
चलो जगह| जाएं रख सकोरा जगह.
इन पंछियों को, भटकना मत पड़े,
ऐसा कोई चलो जतन ये कर जाएं।

इनका गला सुख रहा है,ये प्यासे हैं,
चोंच फैलाए, पानी की तलाश मैं है |
इनके निःश्ब्द वेदना, को हम समझें
ये व्याकुल हैं, ये बहुत हताश में हैं।

ये आसमान में उड़ भी नहीं पा रहीं,
और नही कुलाचें भी भर पा रही हैं|
चहचहाना,चहकना, भी भूल गई हैं,
इसे न भूलें,बगिया वीरान हो रही है।

आसमान का ये भोर हो बड़ी प्यारी,
ये पंछियां गाते रहें, अभिनंदन गीत |
इनसे ही, धरा में, होती है जागरण,
आओ इन पंछियों से, लगा लें प्रीत।

यह बाग–बगीचे, खेत–खलिहान,
ये नदियां सरोवर, और पर्वत पठार |
और गांवशहर-,घरद्वा का आंगन-
पंछियों से चहके, यह सारा संसार।

उत्सव

रचनाकार :- सुशीला साहू रायगढ़ छत्तीसगढ़

होली फागुन मास में, पर्व मनायें खास।
मस्ती में सब झूमते, लेकर मन में आस।।
लेकर मन में आस, सभी मिल नाचे गायें।
भेद भाव सब भूल, खुशी से गले लगायें।।

शीला झूमें आज, गीत गाते जब टोली।
ढोल नगाड़े संग, बजाकर खेलो होली।।
होली पावन पर्व है, सभी लगाते रंग।
रंग बिरंगे रूप में, आओ खेलें संग।।

आओ खेलें संग, नेह का भर लें चाबी।
थाली सजे अबीर, हरा अउ लाल गुलाबी।।
भर शीला मुस्कान, लगे सूरत सब भोली।
तन मन हो रंगीन, पर्व है पावन होली।।

होली के हुड़दंग में, अल्हड़ पन आधार।
फगुआ की बौछार में, नाच रहा संसार।।
नाच रहा संसार, खुशी से बाँट मिठाई।
बुनते स्वप्न हजार, घरों में खुशियां छाई।।

शीला की सुन बात, करो सब हँसी ठिठोली।
खुशियों का त्योहार, मनाओ मिलकर होली।।

भीम जयंती

रचनाकार :- भूपसिंह भारती, बल्डोदिया भवन,आदर्श नगर नारनौल (हरियाणा)

नाचो गाओ, खुशी मनाओ।
घर आंगन में, लड़ी लगाओ।
चौदह अप्रैल है भीम जयंती,
घर-घर घी के दीप जलाओ।

शिक्षित बनो के मूल मंत्र को,
भूल न जाना सब अपनालो।
सब आपस में इक्कठे होकर,
संघर्ष पथ को अब अपनालो।

एक दूजे का हाथ थामकर,
सीख भीम की मन में पालो।
जय भीम का नारा लगाकर,
झांकी भीमराव की निकालो।

छोटे बड़े का भेद रहे ना,
सबको अपने गले लगालो।
आपस में बेटी रोटी करके,
'भारती' जाति भेद मिटालो।

तीन मंत्र

रचनाकार :- भूपसिंह भारती, बल्डोदिया भवन,आदर्श नगर नारनौल (हरियाणा)

बाबा साहेब के तीन मन्त्र,
हमे पढ़ना और पढाना है।
भारत के जन जन को अब,
मिलकर हमें जगाना है।

अशिक्षा अभिशाप बड़ा,
ये सबको बताना है।
बिन शिक्षा के मानव,
होता पशु समाना है।
'शिक्षित बनो' का मंत्र,
अब सबको सिखाना है।

समाज बंटा जो टुकड़ो में,
आपस में उसे मिलाना है।
हम एक के अनेक हुए,
फिर एक होकर दिखाना है।
हाथों में लेकर हाथ लोगों,
'संगठित रहो' का मंत्र पाना है।

छोड़ो लोगों मिमियाना,
दहाडो शेर की मानिंद।
भारत के वीर जवानों,
झुका दो घुटनो पर गोबिंद।
'संघर्ष करो' के मन्त्र को,
बहुजन तक पहुचाना है।

आन बान और शान है भीम,
भारत की पहचान है भीम।
हक और मान हमें दिलाया,
सच मानो भगवान है भीम।
नतमस्तक हो कहे भारती,
भीम सपना साकार बनाना है।

खुशियों की होली

रचनाकार :- तेजराम चंद्रा प्राथमिक शाला द्वारीपारा करतला जिला कोरबा

अबीर गुलाल की दुकान लगी है,
गांव-शहर में होली जली है |

संगी साथी मन मिलके, देखो,
रंगों भरी पिचकारी चली है |

दिल को खुशियां बहुत मिली हैं,
आज प्रेम और विश्वास की होली जली है |

आनंद,उमंग से सबके मन खिली है,
ढोल नगाड़े संग फाग गीत चली है |

देखो,आज खुशियां कितनी मिली हैं,
गांवों में उमंग, उल्लास भरी होली जली है |

व्यंजन गीत

रचनाकार :- सुधारानी शर्मा, मुंगेली छत्तीसगढ

होली आई होली आई,
स्वाद और खुशियां लाई।
व्यंजनों की बगिया जी भर मुस्कुराई।
सारे व्यंजन स्वाद से भरे.
मीठे, तीखे, चटपटे,खरे खारे।
पूरी रानी है गरम नरम,
खाजा मुंह में घुले हरदम।
खोवा मेवे से भरे गुझिया गुलजार,
खीर, हलुवा, गुलाबजामुन,से त्यौहार में बहार।
चिवड़ा, पोहा, मुरमुरा त्यौहार की जान,
रबड़ी,लस्सी, शरबत महफिल की शान।
अनरशा देहरौली गजब ढा रहे,
बड़े बच्चे छोटो सभी को लुभा रहे।
मुंगौडी, दहीबडे,पकौड़े, का नहीं है जवाब,
व्यंजनों की बगिया में है ये लाजवाब।
स्वास्थ्य, खुशहाली,समृद्धि,जीवन मे लाते व्यंजन,
घर घर मे खुशहाली, संस्कृति,स्वाद बढ़ाते व्यंजन |

अभिलाषा

रचनाकार- राजेन्द्र कुमार लास्कर,शास. नवीन प्राथमिक शाला कोलिहाभाठा, बिल्हा,बिलासपुर

जन-जन की मैं आस बनूँ,
प्राणियों में सबके खास बनूँ।
क्षमता मेरी है असीम अपार,
ज्ञानियों का सुखद अहसास बनूँ।

बच्चों के सफल भविष्य गढ़ना, शोषितों के बनूँ हथियार।
ना जाने कितने रंग मेरे है,कर प्रयोग अपने अनुसार।
ना रुकना और झुकना बल्कि,
कामयाबी का मैं इतिहास लिखूँ--।। जन जन की..

सभी जगह मेरी दरकार हो,ना ही क्रोध और तलवार हो।
अंधविश्वास संग रूढ़िवाद मिटे, शिक्षा का यलगार हो।
सत्कर्मों के परिणाम बनकर,
मानवता के मैं पास रहूँ--।।जन जन की मैं..

तर्क लगन धैर्य मेहनत,सफल जीवन की बात लिखूँ।
शान्ति प्रिय भाई-चारा बढ़े,हृदय स्पर्शी संवाद लिखूँ।
मृग ढूँढे अपनी कस्तूरी जैसे,
सफलता की वो तलाश बनूँ--।।जन जन की मैं..

बस इतनी सी है चाह मेरी,कोई भी मुझसे रूठे ना।
चलती राज लकीरें जीवन की,मुझसे कभी भी मिटे ना।
अलख ज्ञान जगाऊँ मन में,
कलम क्रांति से खास बनूँ--।।जन जन की मैं...

मनमौजी

रचनाकार- वसुन्धरा कुर्रे शासकीय प्राथमिक शाला सरईसिंगार जिला कोरबा

हम बच्चे करेंगे मनमौजी, हो गई गर्मी की छुट्टी |
खुशी का ठिकाना न रहा, घूमेंगे, फिरेंगे करेंगे मस्ती |

पढ़ने -लिखने से अब न दोस्ती, दोस्तों से करेंगे खूब मस्ती |
हो गई अब गर्मी की छुट्टी, खुशी का ठिकाना न रहा |

सुबह शाम घुमा करेंगे, खेलेंगे तरह-तरह के खेल |
और करेंगे घरों में शैतानी, दादा -दादी को करेंगे परेशान|

मम्मी- पापा से खाएंगे डाट, देर सुबह तक सोएंगे |
न जल्दी उठने की फिकर, ना होमवर्क करने की चिंता |

ना स्कूल जाने की चिंता, दिन भर करेंगे हम मनमौजी |
हो गई अब गर्मी की छुट्टी, खुशी का ठिकाना न रहा |

नाना -नानी के घर जाएंगे, मामा-मामी के बच्चे से खेलेगे |
दिनभर करेंगे हल्ला -गुल्ला, रात पड़े सुनेंगे नानी से किस्सा |

हो गई अब गर्मी की छुट्टी, खुशी का ठिकाना न रहा |

घड़ी

रचनाकार- आशा उमेश पान्डेय सरगुजा छत्तीसगढ़

घड़ी समय का भान कराती।
बित गयी तो लौट न आती।।
करो समय पर अपना काम।
रौशन होगा इक दिन नाम।।

समय का करोगें जब अपमान।
नहीं मिलेगा तुमको सम्मान।।
समय यही बतलाता रहता।
टिक टिक कर जगाता रहता।।

दादा जी की बात तुम मानो।
समय का है मूल्य पहचानों।।
अच्छी बीज तुम जब बोओगें।
तभी हरी भरी फसल पाओगे।।

कंगन

रचनाकार- सुधारानी शर्मा मुंगेली छत्तीसगढ

मामी गई लंदन
वहां से लाई दो कंगन।
कंगन गया टूट
मामी गई रूठ।
मामी हो गई चुप
खाती ना गुपचुप।
घर में सब परेशान
मामा भी हैरान।
मामी को मनाएंगे
नये कंगन दिलाएंगे।

माँ

रचनाकार- सुधारानी शर्मा मुंगेली छत्तीसगढ

माँ की मूरत
उनकी सूरत।
सबसे अच्छी
सबसे सच्ची।
नहीं दिखावट
कोई बनावट।
आंखों से बोलती
मधुर रस घोलती।
नये पकवान बनाती
हमको रोज खिलाती।
मेरा राजा बेटा कहकर
दिनभर वह डोलती।

मैं पेड़ हूं

रचनाकार- राजेन्द्र जायसवाल, सूरजपुर

मैं एक पेड़ हूं सिर्फ पेड़ नहीं,
एक मां की तरह दुलार करता हूं।
गर्मी धूप में मां के आंचल की तरह छांव देता हूं,
बरसात में भी मां की तरह खुद भीग कर तुम्हें बचाता हूं।
मैं एक पेड़ हूं,
मगर मां की तरह भूखा रहकर तुम्हें फल देता हूं।
आ जाए अगर ठंड का मौसम,
तो सूखी लकड़ी जलाने के काम आता हूं।
खेलता हूं मां की तरह अपने बच्चों के साथ,
छुपा छुपाई खेलता हूं मैं एक पेड़ हूं।
पेड़ जरूर हूं,मगर मुझे भी दर्द होता है,
मैं पेड़ हूं तुम्हें रोटी रोजी से जोड़ जाता हूं।
मेरे अंदर भी जान है मेरी जान से मत खेलो,
मेरे फल खाओ मुझे मत काटो मुझे मत काटो।
धीरे-धीरे जंगल खत्म हो जाएंगे,
मौसम पर भी फर्क पड़ जाएगा।
आपके हर मौसम में बहुत काम आता हूं,
मैं एक पेड़ हूं मैं एक पेड़ हूं।
मुझे मत काटो मुझे मत काटो,
मैं एक पेड़ हूं मैं एक पेड़ हूं।

नीति

रचनाकार:- प्रिया देवांगन, राजिम,गरियाबंद छत्तीसगढ़

वादे करते कितने सारे, आश्वासन भरपूर।
मोह पाश बँध जाती जनता, कैसे होंगे दूर।।
स्पर्श चरण कर माथ लगाते, करते मिथ्या बात।
शब्द शहद सा निकले मुख से, मन में रखते घात।।

मुफ़्त मिलेंगे बिजली राशन, निर्धन को आवास।
चाल लोमड़ी की चलते फिर, बन जाते हैं खास।।
कर्ज मुक्ति की लोक लुभावन, खींचे सारा वोट।
महिलाओं को बाटें रुपया, भरे तिजौरी नोट।।

कार्य पूर्णता बात दूर की, होती है घुसपैठ।
भ्रष्टाचार बढ़ावा देते, चुप कुर्सी में बैठ।।
होड़ मची है राजनीति की, खेले नेता खेल।
लगे दांव धन यश वैभव का, लोग रहे हैं झेल।।

चिकनी चुपड़ी में ना आना, मत रहना खामोश।
भटक गए हैं राजनीति दल, लाना उनको होश।।
साक्षर भारत का अब देना, जनता तुम पैगाम।
काम करें सब जनहितकारी, बने नया आयाम।।

यादें

रचनाकार:- सुन्दर लाल डडसेना बाराडोली,पाटसेन्द्री,सरायपाली,जिला-महासमुंद

मेरा बचपन याद मुझे बहुत आता है।
ये सफर अब ना मुझे वैसे भाता है।
वो रंग बिरंगे कंचे गिल्ली डंडे का खेल।
वो दोस्तों का बनाया हमारा मानव रेल।
वो गर्मी की ठंडक अमरैय्या।
वो घाँस की स्पंज सी शैय्या।
ना जाने कब तक चलती थी हमारी बाल पंचायत।
सब अपने आप को मानते थे न्यायप्रिय और महारत।
वो दादा नाना का दुलार,वो दादी नानी का लाड़ प्यार।
वो माता पिता की पुचकार,वो भाई बहन का दुलार।
वो मेरी मस्ती और पास पड़ोस की डांट फटकार।
आज भी याद आता है मुझे,वो भैय्या की मार।
शक्तिमान का दोपहर और मोगली की शाम।
गलती करें दोस्त,होता मैं ही बदमाश बदनाम।
संग में खाना,संग सोना,संग में रहना,संग में खेलना।
सच कहूँ तो बहुत याद आता है,दादा का उँगली पकड़ना।

कामयाब

रचनाकार:- श्याम सुंदर साहू प्राचार्य राजिम जिला गरियाबंद छत्तीसगढ़

कदम उनके कभी नहीं रुकते,
मंजिले जिनके ख्वाब होती है।
कोशिश करना मत छोड़ क्योंकि
कोशिशें कामयाब होती है।।

अक्सर हिम्मत टूट जाते हैं,
जब हलाते खराब होती है।
कोशिश तू हमेशा कर क्योंकि
कोशिश कामयाब होती है।।

जो रखता है लक्ष्य को सीने में,
लक्ष्य उनका लाजवाब होती है।
कोशिशें तू जारी रख क्योंकि
कोशिश कामयाब होती है।।

जिंदगी की कठिन राहों में,
मुश्किलें बेहिसाब होती है।
कोशिशें तू करते जा क्योंकि
कोशिश कामयाब होती है।।

जरूरी है

रचनाकार:- श्याम सुंदर साहू प्राचार्य राजिम जिला गरियाबंद छत्तीसगढ़

कामयाबी पाने के लिए, काबिल बनना जरूरी है।
काबिल बनने के लिए, मेहनत करना जरूरी है।।

जीवन में कुछ बनने के लिए, सपना देखना जरूरी है।
सपना पूरा करने के लिए, मेहनत करना जरूरी है।।

सफल इंसान बनने के लिए, लक्ष्य बनाना जरूरी है।
लक्ष्य को पाने के लिए, मेहनत करना जरूरी है।।

मंजिल तक पहुंचने के लिए, कठिन राह में चलना जरूरी है।
जीवन मे आगे बढ़ने के लिए, मेहनत करना जरूरी है।।

कुछ हासिल करने के लिए, मन मे दृढ़ संकल्प जरूरी है।
सफलता पाने के लिए, मेहनत करना जरूरी है।।

कदमों पे

रचनाकार:- श्याम सुंदर साहू प्राचार्य राजिम जिला गरियाबंद छत्तीसगढ़

मेहनत की दीप जलाओगे तो, रोशन तुम्हारा जीवन होगा।
कठिन परिश्रम करोगे तो, सफलता तेरे कदमों पे होगा।।

भाग्य के भरोसे बैठोगे तो, सारी उम्र निकल जाएगी।
कड़ी मेहनत करोगे तो, जिंदगी संवर जाएगी।।

आज ठोकरे खावोगे तो, कल जीत तेरी निश्चित होगी।
इरादा को दृढ़ रखोगे तो, ख्वाब जरूर पूरी होगी। ।

जीवन में धैर्य रखोगे तो, सब कुछ हासिल हो जाएगा।
निरंतर चलते रहोगे तो, मंजिल तुझे मिल ही जायेगा।।

अपने अंदर जुनून जगाओगे तो, कठिन राह आसान हो जाएगा।
कड़ी मेहनत तुम करोगे तो, भाग्य का पट तेरा खुल जाएगा।।

ऑनलाइन

रचनाकार:- श्याम सुंदर साहू प्राचार्य राजिम जिला गरियाबंद छत्तीसगढ़

आजकल के बच्चों में चढ़ गया, ऑनलाइन गेम का बुखार।
जहां कहीं भी देखो इसे खेलते, नजर आ जाते बच्चे दो चार।।

अपने सुनहरे भविष्य के प्रति, नहीं है कोई भी आज गंभीर।
सुबह शाम गली मोहल्ले में, खेलने वालो की लग जाती भीड़।।

सपने जो देखे थे कल तक, वो सपना कहीं दूर जा रहा।
ऑनलाइन गेमिंग कंपनियों के, जाल में बचपन फंसता जा रहा।

ऑनलाइन गेमों की दुनिया ऐसे, चाह कर भी इसे नहीं छोड़ सकते।
दिमाग में ये असर करते हैं ऐसे, जिसे खेले बिना नहीं रह सकते।।

गेम खेलने में ये इतने रहते हैं चूर, न उनको प्यास लगती है न भूख।
सपनों को कर रहे वो चकनाचूर, बाद में होगा उनको दुःख ही दुःख।।

अगर मन में संकल्प कर ले तो, इन गेमो के लत से बच जाओगे।
खाली समय का सदुपयोग करके, इन गेमों से निकल जाओगे।।

कभी सोचा नहीं

रचनाकार:- श्याम सुंदर साहू प्राचार्य राजिम जिला गरियाबंद छत्तीसगढ़

ऐ मुसाफिर मायूस मत हो, वजूद छोटा नही।
सब कुछ कर सकता है, जो कभी सोचा नहीं।।

कभी हिम्मत मत हार, मंजिल तुझसे दूर नहीं।
हर ख्वाब पूरा हो सकता है, जो कभी सोचा नहीं।।

निरंतर आगे बढ़ते जा, लक्ष्य से कभी भटकना नहीं।
सब कुछ पा सकता है, जो कभी सोचा नहीं।।

रास्ते के पत्थर तुझे गिरा दे, पत्थर मे इतना औकात नहीं।
सब हासिल कर सकता है, जो कभी सोचा नहीं।।

तुझे कोई रोक टोक सके, ये किसी मे हिम्मत नहीं।
जो चाहे वो कर सकता है, जो कभी सोचा नहीं।।

मौसी

रचनाकार:- प्रीतम कुमार साहू भिलाई दुर्ग

बिल्ली मौसी घूमने को जब,
घर से बाहर आई !
देख मिठाई जी ललचायी,
खाई रस मलाई !!
बिल्ली को जब लगी प्यास,
चलकर आयी घर के पास !!
देख दूध से भरा गिलास,
बढ़ गया, दूध पीने की आस !!
पीकर दूध से भरा गिलास,
अपनी प्यास बुझाई !
कहने लगी बिल्ली मौसी,
अब जान में जान आई !!

गर्मी आया

रचनाकार:- जीवन चन्द्राकर खपरी, दुर्ग(छत्तीसगढ़)

आ गया अब गर्मी विकराल,
सूख गए सब नदियां, ताल।
गरम गरम अब चले समीर,
प्राणी पादप हो गए अधीर।
राह हुए हैं सब सूनसान,
जिसमें चलते निकले जान।
मारे गर्मी के सब हुए बेहाल,
और छांव में पड़े निढाल।
आ गया अब गर्मी विकराल,
आ गया अब गर्मी विकराल |

बोलो

रचनाकार:- सुषमा बग्गा शासकीय नवीन प्राथमिक शाला पारस नगर रायपुर

अ से अनार,आ से आम
मिलकर बोलो जय श्री राम ||
इ से इमली, ई से ईख
रामायण सिखाती अच्छी सीख ||
उ से उल्लू,ऊ से ऊंट
राम नाम का भर लो घुट ||
ए से एड़ी, ऐ से ऐनक
हनुमान जी श्री राम जी के सेवक ||
ओ से ओखली, औ से औरत
राम नाम सबसे बड़ी दौलत ||
अं से अंगूर,अ: रहा खाली
राम नाम हर ताले की चाबी ||
भक्तों बजाओ जोर से ताली
भर जाएगी झोली खाली ||

मतदान

रचनाकार:- श्रीमती ज्योती बनाफर, शास.पूर्व माध्य.शाला मटका,जिला- बेमेतरा

आओ करें हम एक शुभदान।
नाम जिसका है मतदान। ।

लोकतंत्र का आया त्यौहार।
सब मिलकर मनाएं अबकी बार।।

मत करना लालच, ना खोना ईमान।
साड़ी,बिछिया नहीं आएगा काम।।

सही चुनाव हमारा अधिकार।
चुनेंगे अब हम सरकार।।

समझो कीमत अपने वोट की।
एक एक है अनमोल।।

सोच समझ कर बटन दबाना।
मन हो ना डावा डोल।।

चहकी

रचनाकार:- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

लेकर दादी दाना- पानी,
कहती आओ चिड़िया रानी |

कहाँ- कहाँ से उड़- उड़ आती,
चहकी- फुदकी चिड़िया गाती |

आगे- पीछे दौड़ लगाती,
चुग- चुगकर वह दाना खाती |

पीकर पानी चूँ- चूँ गाती,
खुश होकर सब फुर- फुर जाती|

महादान

रचनाकार:- डिजेन्द्र कुर्रे बसना

तलाश जारी रहे मंजिल की,
शिक्षा की अलख जगा दो।
वक़्त पड़े तो अपने खून को,
दूसरे के रगो में बहा दो।

योगदान करें समाज का नित,
जीवन बगिया महका दो।
रक्त दान सेवा करके तुम,
जरूरतमंदो का मन बहला दो।

मन से सेवा तन से सेवा,
और रक्त दान से सेवा।
जीवन की यही असल भलाई,
तभी मिलेगी जीवन में मेवा।

ये रक्तवीर साहसी आगे बढ़,
नव जीवन देकर पुण्य कर्म कर।
मानव कल्याण सतत करते चल,
हे युवा पीढ़ी आगे बढ़ आगे बढ़।

ग्रीष्म ऋतू

रचनाकार:- अशोक पटेल व्याख्याता-हिंदी तुस्मा,शिवरीनारायण

ग्रीष्म ऋतू, अब आई है,
भीषण गर्मी, ये लायी है।
सूर्य हुआ है, लाल-लाल
लोग हो रहे, हाल-बेहाल।
जल रहा जमीं आसमान।
हो रहे हैं, सभी हलाकान।

मंजर

बूँद-बूँद, पानी, हो गया है अब खास
इसको हर कोई कर रहा है तलाश।

क्योंकि गर्मी का हो रहा है आभास
इसके बिना हो रहे हैं, सभी हताश।

इसको समझ पाते, यह पहले काश
नही सुखता गला, बुझ जाती प्यास।

नदी तालाबों मे पानी होता आसपास
हरियाली होती, मंजर न होता उदास।

बेपरवाह

लोग हो गये हैं, कितने लापरवाह
यहाँ किसी का नही करते परवाह।
पर्यावरण की, नही सुन रहे कराह
इसीलिए लग रहा, सभी को आह।
धरा करती रही है, हमेशा आगाह
पर यह इंसान बना रहा बेपरवाह।

नव वर्ष

रचनाकार:- अशोक पटेल व्याख्याता-हिंदी तुस्मा,शिवरीनारायण

मैं इस, धन्यका धरा-, हिन्दू हूँ,
मेरा घरसंसार-, हिंदुस्तान है।
मैंने, इस मिट्टी में, जन्म लिया,
इसका बहुत मुझे अभिमान है।

हम भारतवासी, सच्चे हिन्दू हैं,
हम सब विक्रम संवत मनाएँगे |
चैत्र प्रतिपदा तिथि को मिलके,
हिन्दू जनजन नव वर्ष मनाएँगे।

आओ नमन करें, हम जनजन,
विक्रमादित्य महान सम्राट को।
आओ अभिनन्दन,स्वागत करें,
ऐसे प्रतापी महाराज विराट को।

आइए हम सब बहिष्कार करें,
विदेशी, सभ्यता, संस्कृति को।
आइए हम सब, अंगीकार करें,
सनातन भारतीय संस्कृति को।

आइए भगवा, झंडा फहराएंगे,
भारत की, जयकारा लगाएंगे।
अपने धर्म का, सम्मान बढाएंगे,
भारत माँ का सर ऊँचा उठाएंगे।

ये,भारत हम सबकी पहचान है,
भारत ही हमारा, स्वाभिमान है।
भारत अखिल विश्व में महान है,
यही हम सभी का, अभिमान है।

हे माता तेरी मिट्टी की सौगंध है,
हम तेरी लाज, हरदम बचाएंगे।
चाहे कुछ हो जाए माता हम तो,
तेरा पर्वत सा भाल ऊँचा उठाएंगे।

रेलगाड़ी

रचनाकार:- महेश गुप्ता सहायक शिक्षक विज्ञान बूंदिया, सुरजपुर (छत्तीसगढ)

छत्तीसगढ में छुक छुक करती चलती रेलगाड़ी,
विष्णु साय जी हैं मुख्यमंत्री, रायपुर है राजधानी|

आओ सुनाऊं, पांच संभाग, तैतीस जिलों के नाम मुंहजबानी,
सरगुजा में सूरजपुर,जशपुर, कोरिया,एम सी बी, बलरामपुर में तातापानी।

बिलासपुर में जांजगीर चांपा,जीपीएम, मुंगेली, रायगढ़,सारंगगढ़ सक्ति,
कोरबा में है ब्लैक डायमंड की खान बहुत सारी।

रायपुर में बलौदाबाजार, महासमुंद, धमतरी, गरियाबंद में लगता कुंभ मेला,
दुर्ग में मानपुर मोहला अंबागढ़ चौकी, बालोद, बेमेतरा|

खैरागढ़ छुई खादान गंडई, कवर्धा,राजनांदगांव में है मां बमलेश्वरी महारानी,
बस्तर में है कांकेर, कोंडागांव, बीजापुर, नारायणपुर, सुकमा, दंडेवाड़ा में है मां दंतेश्वरी वरदानी |

गर्मी की

रचनाकार:- डॉ. कन्हैया साहू 'अमित' शिक्षक- भाटापारा छत्तीसगढ़

बंद हुआ अब स्कूल, खूब ये उधम मचाते।
नौटप्पा का धूप,कब कहाँ ये घबराते।
मौज मनाते मस्त,मगन मनमर्जी मस्ती।
खेल खिलौना खूब, खरीदें महँगी सस्ती।

रखकर काँधें हाथ,सभी अपने हमजोली।
मई जून दो माह,मजा लुटती ये टोली।
कैरम, लूडो, ताश,चोर मंत्री महरानी।
घर बैठे बस खेल,करें अपनी मनमानी।
खाते भरभर पेट, पपीता, खीरा, ककड़ी।
छुपन छुपाई खेल, खेलते पकड़ा पकड़ी।
जाते मामा गाँव, मगन मन मौज मनाते,
नदियाँ पोखर ताल,नहर में खूब नहाते।
तेन्दू, इमली, आम, पेड़ लठ मार गिराते।
पहुँच न पाये हाथ, तार डंडी लगवाते।
घर पर टिके न पैर, घुमें सब खेती बाड़ी।
करें सवारी रोज,सायकल, बैलागाड़ी।~4
बच्चों की चौपाल,छाँव में पीपल, बरगद।
खेलें मिट्टी धूल, अमित मन हरषे गदगद।
गरमी भीषण रूप, देख सब बचतें हट के।
बच्चें मस्त मलंग, खेलते दिनभर डट के।

धरती माता

रचनाकार :- गरिमा बरेठ कक्षा - नवमीं

धरती हमारी माता है, पृथ्वी हमारी जन्मदाता है।
इनसे जुड़ा है, सारे जग का नाता।

भू, भूमि, धरा, धरती, तेरे है कितने नाम।
तू है रंग - बिरंगे रंगो वाली, हमारी धरती माता।

तू ही है हमारी मां, रखती हमारा कितना ध्यान है।
तेरी ही गोद में पले जग सारा, हर प्राणी की जान है तू।

तुझमें ही जीव जंतु,हवा,आग, पानी,
जिन्होंने मिलकर बनाया इस जग को सबसे प्यारी।
मगर अब आने वाले वक्त के साथ बदल रहा मानव,
बन रहा है अब वो प्रकृति दानव।

झूला झूलें

रचनाकार:- जीवन चन्द्राकर मा.शाला खपरी, दुर्ग(छत्तीसगढ़)

आओ यारो, झूला झूलें,
आपस के झगड़ा को भूलें।
झूलें झुलायें बारी-बारी।
चलो निभाएं अच्छी यारी।
सदा रहें ऐसे ही मिल के,
बात करें,दिल से दिल के।
एक दूजे का साथ निभाये,
अम्बर के तारों को छू लें।
आओ यारों झूला झूलें।

भीमराव

रचनाकार :- कामिनी जोशी दुल्लापुर, कबीरधाम

बाबा साहेब तुम्हे प्रणाम,
भारत की पावन गाथा में नाम। ।
तुमने वो कर दिखाया,
जो था असम्भव काम।।

देश विदेश में भी परचम लहराया,
रोशन किया भारत का नाम।।
भीम जैसा सूरज निकलकर,
दिया दलितों को भी पहचान।।

दलितों के जीवन हुआ उजाला,
मिला भीम जैसा रखवाला।।
भारत के बगिया में फूल एक चमन,
बाबा आप कहलाये शत शत नमन। ।

संविधान का निर्माण कर दिया असली आजादी,
महिलाओं को अधिकार देकर होठो में मुस्कुराहट दी।।
मसीहा ऐसा होता रहे इस पावन धरा के अंदर,,
कोटि कोटि वंदन भीमराव अंबेडकर।।

छत्तीसगढ़ी बाल गीत

स्कूल जाबो

रचनाकार :- गजानंद प्रधान शिक्षक मा.शाला गाड़ापारा सरिया, बरमकेला जिला सारंगढ़ बिलाईगढ

स्कूल जाबो स्कूल जाबो,
स्कूल जाबो जी|
पढ़ लिख के हमन,
अबड़ नाम कमाबो जी। ।

पुस्तक मिलिहि, मिलिहि कापी,
मिलिहि पौष्टिक खाना।
सबो संगी साथी ल लेके,
रोज स्कूल हे जाना।।
देश भर में छत्तीसगढ़ के,
मान बढ़ाबो जी|
स्कूल जाबो स्कूल जाबो,
स्कूल जाबो जी।

छात्रवृत्ति आउ नवा डेरेस,
मिलिहि भैया इहां|
मिलिहि नवा साइकिल,
स्कूल नइ हे अब दूरिहा।।

गांव गली म शिक्षा के,
अलख जगाबो जी |
स्कूल जाबो स्कूल जाबो,
स्कूल जाबो जी।।

स्कूल म गाबो गीत कविता,
पढ़बो नवा कहानी|
जम्मो साथी मिल जुलके,
खेलबो आनी बानी।।
पढ़ लिख के धरती मैया के,
सेवा करबो जी |
स्कूल जाबो स्कूल जाबो,
स्कूल जाबो जी।

खेल खेल म सीखबो गणित,
आउ पढ़बो अंगरेजी |
सम्पर्क दीदी संग रेडियो सुनबो,
स्मार्ट क्लास म पढ़बो जी।
चंद्रयान म उड़के,
इतिहास बनाबो जी |
स्कूल जाबो स्कूल जाबो |
स्कूल जाबो जी |

होली गीत

रचनाकार :- राजकुमार निषाद बिरोदा, धमधा जिला दुर्ग छत्तीसगढ़

राधा झन जाना ओ, खड़े हावय गिरधारी।
तोला रंग दिही ओ, धरे हवय पिचकारी।।

मैं जाहूं सखी चाहे, खड़े रहय गिरधारी।
मोला काहे के डर, धरे रहय पिचकारी।।

ग्वाल बाल संग, आवय कन्हैया।
भर भर पिचका, मारय कन्हैया।।

मया पीरित के, होली तिहार हे।
रंग बिरंग के, उड़त गुलाल हे।।

गोपियन मन, होली खेले बर आगे।
किशन कन्हैया सबके, मन ला भागे।।

जनम जनम के नाता जबर हे।
राधा किशन के नाम अमर हे।।

होली

रचनाकार :- अशोक कुमार यादव मुंगेली, छत्तीसगढ़

रंग धरके आहूँ ओ, मैंय ह तोर दुवारी।
कपाट खोले रहिबे न, मारहूँ पिचकारी।।

तोला बलाए बर, मैंय फाग गीत गाहूँ।
झूम-झूम के नाचबो, नगाड़ा बजाहूँ।।
तैंय पहिन के आबे ओ, लाली के साड़ी।
रंग धरके आहूँ ओ, मैंय ह तोर दुवारी।।

लगाहूँ तोर गाल म, मयारू खूब गुलाल।
हिल-मिल के मनाबो, फागुन के तिहार।।
मन ल मोर भा गे हच, बन जा सुवारी।
रंग धरके आहूँ ओ, मैंय ह तोर दुवारी।।

मोर मया के रंग, कभू छुटय नहीं गोरी।
कतको धोले पानी म, खेल के होली।।
गुलाबी देंह दिखे, परसा फूल चिन्हारी।
रंग धरके आहूँ ओ, मैंय ह तोर दुवारी।।

एक सवाल ?

रचनाकार :- राजकुमार निषाद'राज' बिरोदा धमधा जिला-दुर्ग छत्तीसगढ़

दुनिया मा बाढ़ गे हे पाप अउ अत्याचार,
अब धरती मा अवतार लेके आही कोन?
देख अधर्म के आँधी चारो मूड़ा छाय हे,
राम सहीं धर्म के धजा फहराही कोन?

अत्याचार अउ अनाचार होवत हे नारी के,
अब कृष्ण सहीं आ के लाज बचाही कोन?
दुनिया मा बाढ़ गे हे पाप अउ अत्याचार,
अब धरती मा अवतार लेके आही कोन?

नियत गड़ाये गिधवा कस मन मा हे रावण,
हनुमान सहीं लंका मा आगी लगाही कोन?
दुनिया मा बाढ़ गे हे पाप अउ अत्याचार,
अब धरती मा अवतार लेके आही कोन?

बाप के कमई मा भाई-भाई बँटवारा होगे,
भरत सहीं त्याग अउ बचन निभाही कोन?
दुनिया मा बाढ़ गे हे पाप अउ अत्याचार,
अब धरती मा अवतार लेके आही कोन?

झुर कर महिना आइस

(सरगुजिहा)

रचनाकार- आशा उमेश पान्डे सरगुजा छत्तीसगढ़

झुर कर महिना आइस।
झुरथ संधे ओहर लाइस।।
देह ले टपकेल पसीना।
हो जाथे मुस्किल जीना।।

ठंडा ठंडा चीज ला खइहा।
धाम में लरिका झीन जइहा।।
खीरा, ककरी रोएज खइहा।
पानी कर कमी ले बाचे रइहा।।

लीमू कर रस रोएज पिहा।
बिटामीन ढेर ओम्हे पइहा।।
करथे जम्मो रोग ला दूरिहा।
फेर तुमन निरोग हे रइहा।।

हरियर हरियर फेड़ लगइहा।
झुर में फेर छांव ला पइहा।।
डगर बुलत मइनसे मन ला।
राहत मिलही जम्मो झन ला।।

शीतला मइँया

रचनाकार- राजकुमार निषाद बिरोदा-धमधा, जिला दुर्ग छत्तीसगढ़

बइठे हावय निमुवा के छइँहा।
मोर गाँव के दाई शीतला मइँया।।

बीच बस्ती मा सुग्घर, हावय तोर डेरा।
संग मा महामाया दाई, करे हे बसेरा।।
चँवर डोलावय मोरे लंगुरे भइया,
मोर गाँव के दाई शीतला मइँया।।

सब ला शीतल करे दाई, महिमा हे भारी।
सेवा तोर करत हावय, जम्मो नर-नारी।।
गाँव के तैं कुल देवी, पावन हे भुइँया।
मोर गाँव के दाई शीतला मइँया।।

अलहन झन आवय कभू, दाई मोर गाँव मा।
आशीष देवत बइठे रहिबे, निमुवा के छाँव मा।।
अर्जी हे दाई मैं परत हावँव पइँया।
मोर गाँव के दाई शीतला मइँया।।

नानी के घर जाबो

रचनाकार- डॉ. कन्हैया साहू भाटापारा छत्तीसगढ़

छुट्टी होगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो।
पढ़ना-लिखना छोड़ चिटिक हम, नँगते मजा उड़ाबो।।

पोठ करे हन पढ़ई-लिखई, हालत होगे खस्ता।
निपट परीक्षा गेहे जम्मों, थीरथार हे बस्ता।
बेर चढ़त ले नींद भाँजबो, सपना सुघर सजाबो।
छुट्टी होगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो।

खीर तसमई संग करौनी, मिलही दूध, महेरी।
गाय, भँइस के पाछू फिरबो, पाबो बछिया, छेरी।
मलर-मलर मनमाने करबो, इँतरौना इँतराबो।
छुट्टी होगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो।

बारी-बरछा बइठ बिलमबो, थाँघा झूलना डारे।
आनी-बानी फर हम खाबो, भले पेट ला झारे।
नरवा-नदियाँ, तरिया-डबरी, मनभर डुबक नहाबो।
छुट्टी होगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो।

ममा पुरोही खँगती-बढ़ती, मामी मया जताही।
गोठ सुजानिक नाना करके, बढ़िया बात बताही।
संग समो के सब ला संगी, सिरतों समझ बढ़ाबो।
छुट्टी होगे गरमी के अब, नानी के घर जाबो।
पढ़ना-लिखना छोड़ चिटिक हम, नँगते मजा उड़ाबो।।

आगे नवरात

रचनाकार- राजकुमार निषादराज बिरोदा धमधा जिला-दुर्ग छत्तीसगढ़

आगे हावय तोरे नवराति, करत हवय सब मिल के तइयारी।
नर-नारी मोर गाँव के, दाई तोर नाँव के मइँया तोर नाँव के।।

दर्जी भइया धजा बनाय बर, कपड़ा बिसा के लावत हे।
लाली करिया सादा कपड़ा के, सुग्घर धजा बनावत हे।।

कुम्हार भइया नदिया तीर के, चिक्कन माटी लावत हे।
आनी-बानी के कलशा नांदी, माता जी बर बनावत हे।।

सोनार भइया हा चाँदी सोन के, गहना-गुठा बनावत हे।
कान के कुण्डल पाँव पैजनिया, मुकुट माला सजावत हे।।

बढ़ई भइया लकड़ी काट के, पाट अउ पिड़हा बनावत हे।
चंदन काठ के आसन बना के, माता जी बर लगावत हे।।

माली भइया बगिया के फूल, पान दूबी घलो लावत हे।
चंपा चमेली फूल दशमत, मोंगरा के गजरा बनावत हे।।

लोहार भइया तिरसुल बाना, भाला बरछी बनावत हे।
खड़्ग कटारी काँटा चँवारी, माता रानी ला धरावत हे।।

सेउक भइया झांझ मंजीरा, ढोलक धर के आवत हे।
सुमर-सुमर के झुमर-झुमर के, तोरे जब ला गावत हे।।

नवरात

रचनाकार:- राजकुमार निषादराज बिरोदा धमधा जिला-दुर्ग छत्तीसगढ़

आगे हे नवरात, सबो करलौ तइयारी।
कलशा ऊपर जोत, दिखै सुग्घर फुलवारी।।
माता रानी आज, हमर अँगना मा आही।
दर्शन देही रोज, मया अब्बड़ बरसाही।।
हावय हमरो गाँव मा, माता रानी शीतला।
गाबो माता रोज ओ, नौ दिन माँ जसगीत ला।।

माता के दरबार, लगे हे सुग्घर मेला।
धरलौ दूबी फूल, संग मा नरियर मेला।।
माता के जसगीत, भजन हम मिलके गाबो।
दर्शन कर के आज, सबो आशीष ल पाबो।।
दर्शन देही आज माँ, सब के रखही लाज माँ।
महिमा हवे महान जी, जानत सकल जहान जी।।

मतदान

रचनाकार:- राजकुमार निषादराज बिरोदा धमधा जिला-दुर्ग छत्तीसगढ़

चलौ दीदी चलौ भइया, चलौ जी सियान गा।
आवौ सब मिलके हमन, करबो मततान गा।।

जानौ अउ समझौ भइया, अपन अधिकार ला।
मिल के सब मनाहू दीदी, ये चुनई तिहार ला।।
कतको आही भरमाही जी, झन देहू कान गा।
आवौ सब मिलके हमन, करबो मततान गा।।

देश के विकास होही, अउ नवा बिहान होही।
शिक्षा रोजगार मिलही, सुखी किसान होही।।
मत के महत्व ला संगी तँय हा पहिचान गा।
आवौ सब मिलके हमन, करबो मततान गा।।

कतको रहय काम गा, झन करव बहाना जी।
पहिली मतदान करहू, फेर कहूँचो जाना जी।।
जिम्मेदारी हावय सब के, सुनले मितान गा।
आवौ सब मिलके हमन, करबो मततान गा।।

लीम फूल

रचनाकार :- रुद्र प्रसाद शर्मा पुसौर, रायगढ़

फागुन के पाछु आथे चईत्,
चईत म फूलय लीम के फूल।।
सुरल के लीम फूल टोरे बर,
बाँस के डांग ल धर के झूल।।

लीम फूल जतका सुरले वाला,
हाँथ म रमंज के ढेंठी ल निमार।
फूल जम्मो ल पानी म बोरके,
सफा ठऊर म छान के राख दार।।

सफा, सुग्घर पताल भाँटा छाँट।
भाँटा ल छोलेबर परसुल म काट।।
आगी ल बार कढ़ेई म पानी ले।
भाँटा ल धोय पाछू तेला उसन दे।।

सूखा कढ़ेई म तेल तातेतात ठोंक।
सेरसों, जीरा,मिरचा ल ओमा झोंक।।
डुआ ल घाँटे बर चिटिक झिन रोक।

चड़चड़ फोर के लीम फूल ला छोंक।।

पीस अरुआ चाँउर,मिरचा, लेसुन।
सिलबट्टा म मसलहा बनही,धर धुन।।
लीम फूल के चीला भी बना दार।
खाबे त जानबे ओखर सदगुन।।

चिटिक नून थोकिन हरदी लगा।
माँझा म झँपाय बर पताल मँगा।।
तोपनी म तोप पताल उसने तक,
लीम फूल साग के मीठ ल ले सगा।।

पताल के पानी ह पेरा जाही जभे।
उसन के राखे भाँटा ल डारबे तभे।।
करू चिटिक गुनकारी लीम फूल के साग।
जेन ह खाय उँखर जागय भाग।|

पेट भीतर करय सफा चाम ल निखारे।
निकता राखे तबीयत, किरमी ल झारे।।
देह बर हितकारी लीम, ध्यान देके सुन।
लीम फूल के हावय आनीबानी गुन।।

डेहरी म

रचनाकार :- राजकुमार निषाद'राज' बिरोदा धमधा जिला-दुर्ग छत्तीसगढ़

मोर डेहरी म दाई, दरस देखा जा ओ।।
मोर डेहरी म दाई, दरस देखा जा ओ।।

आजाना मइँया मोर, रद्दा जोहत हौं तोर।
सुरता लमायें हावँव, नैना बिछाये हावँव।।

तोरे अगोरा म ओ, आरती सजाये हावँव।
चउँक पुरा के दाई, दियना जलाये हावँव।।

आनी-बानी के दाई, फुलुवा सजाये हावँव।
केकती अउ केंवरा के, गजरा बनाये हावँव।।

सेउक बलाये हावँव, जसगीत गावत हावँव।
दाई तोर महिमा ला, गा के सुनावत हावँव।।

लक-लक ले घाम

रचनाकार:- जीवन चन्द्राकर मा.शाला खपरी, दुर्ग(छत्तीसगढ़)

सरी मंझनिया तैहर,झन घूम रे मंगलू।
नई त फेर तोर ऊपर,झँपा जाही लू।
लक-लक,लक-लक करत हे,
सरी मंझनिया के घाम।
घर ले निकलते साठ,
अलकरहा तीपत हे चाम।
अपन खीसा मा,तै गोंदली ला राख।
मुड़ी नाक कान ला एके दरी बने ढांक।
रही रही पियत रहा, तैहर साफ पानी।
ऊंच-नींच खाये के,झिन करबे नदानी।
नहीं त भुगते पड़ही,अलकरहा परिनाम।
लक-लक करत हे.....

आगे रितु बसंत

रचनाकार :- छतलाल मणि नेवसा, बिलासपुर

आगे रितु बसंत के हवा,
घुरगे पवन म अमरित के दवा |

चारों कोती आनंद मंगल छाये हे,
रूखवा राई फागुन के रंग नहाये हे।

कतको रूखवा मन, जुनना लुगरा ल छोरत हे,
कतको मन तो, फूले फूल के तिननी मोरत हे।

कोलिहा, बिघवा मन बिहाव के टिकिस धरे हें,
कोनो अमिताब बचन,शक्ति कपूर बने हें।

कोनो जोककङ,कोनो परी बने हे,
कोनो पेट फूटत ले खावत हें |

टाइम बेटाइम मोहरी बजावत हें,
अपन तरीका ले सब बसंत के तिहार मनावत हे |

आवव अब हमू मन, उनखर संग निभाबोन,
अपन प्रकृती ल, सुग्घर अउ साफ बनाबोन।

फागुन के तिहार मिलजुल रंग गुलाल लगाबो।

आवव आवव रितु बसंत के परब मनाबोन।

रंग जमाबो

रचनाकार :- के.पी.साहू गुंडरदेही

रंग मा रंग जमाबो,
होली जबर मनाबो |

यारी,प्यारी संगी संगवारी,
प्रीत बढ़ हे मोर घर के सुआरी।

चौक,चौराहा खार खार मा,
दाऊ के कोठी,मंडल दुवार मा |

फागुन महीना हे मधुमास,
रंग रंग के रंग टारे उदास |

ये दरी सतरंगी होली मनाबो,
रंग मा रंग जमाबो |

जबर होली मनाबो,
होली जबर मनाबो।

पंचतंत्र की कहानी

बंदर और खरगोश

एक बड़े-से जंगल में एक बंदर और एक खरगोश बड़े प्यार से रहते थे। दोनों में इतनी अच्छी दोस्ती थी कि हमेशा एक साथ खेलते और अपना सुख-दुख बांटते थे।

एक दिन खेलते-खेलते बंदर ने कहा, “मित्र खरगोश, आज कोई नया खेल खेलते हैं।” खरगोश ने पूछा, “बताओ कौन-सा खेल खेलने का मन है तुम्हारा?”

बंदर बोला, "आज हम दोनों को आँख-मिचोली खेलनी चाहिए।" खरगोश हंसते हुए कहने लगा, "ठीक है, खेल लेते है। बड़ा मज़ा आएगा।" दोनों यह खेल शुरू करने ही वाले थे कि तभी उन्होंने देखा कि जंगल के सारे पशु-पक्षी इधर-उधर भाग रहे हैं।

बंदर ने फ़ुर्ती दिखाते हुए पास से भाग रही लोमड़ी से पूछा, "अरे, ऐसा क्या हो गया है? क्यों सब भाग रहे हैं?" लोमड़ी ने जवाब दिया, "एक शिकारी जंगल में आया है, इसलिए हम सब अपनी जान बचाकर भाग रहे हैं। तुम भी जल्दी भागो वरना वह तुम्हें पकड़ लेगा।" इतना बोलकर लोमड़ी तेज़ी से वहाँ से भाग गई।

शिकारी की बात सुनते ही बंदर और खरगोश भी डर कर भागने लगे। भागते-भागते दोनों उस जंगल से काफ़ी दूर निकल आए। तभी बंदर ने कहा, "मित्र खरगोश, सुबह से हम भाग रहे हैं। अब शाम हो चुकी है। चलो, थोड़ा आराम कर लेते हैं। मैं थक गया हूँ।"

खरगोश बोला, "हाँ, थकान ही नहीं, प्यास भी बहुत लगी है। थोड़ा पानी पी लेते हैं। फिर आराम करेंगे।"

बंदर ने कहा, "प्यास तो मुझे भी लगी है। चलो, पानी ढूंढते हैं।"

दोनों साथ में पानी ढूंढने के लिए निकले। कुछ ही देर में उन्हें पानी का एक मटका मिला। उसमें बहुत कम पानी था। अब खरगोश और बंदर दोनों के मन में हुआ कि अगर इस पानी को मैं पी लूंगा, तो मेरा दोस्त प्यासा ही रह जाएगा।

अब खरगोश कहने लगा, तुम पानी पी लो। मुझे ज़्यादा प्यास नहीं लगी है। तुमने उछल-कूद बहुत की है, इसलिए तुम्हें ज़्यादा प्यास लगी होगी।

फिर बंदर बोला, "मित्र, मुझे प्यास नहीं लगी है। तुम पानी पी लो। मुझे पता है, तुमको बहुत प्यास लगी है।"

दोनों इसी तरह बार-बार एक दूसरे को पानी पीने के लिए कह रहे थे। पास से ही गुज़र रहा हाथी थोड़ी देर के लिए रुका और उनकी बातें सुनने लगा।

कुछ देर बाद हंसते हुए हाथी ने पूछा, "तुम दोनों पानी क्यों नहीं पी रहे हो?"

खरगोश ने कहा, "देखो न हाथी भाई, मेरे दोस्त को प्यास लगी है, लेकिन वो पानी नहीं पी रहा है।"

बंदर बोला, "नहीं-नहीं भाई, खरगोश झूठ बोल रहा है। मुझे प्यास नहीं लगी है। इसको प्यास लगी है, लेकिन यह मुझे पानी पिलाने की ज़िद कर रहा है।"

हाथी यह दृश्य देखकर बोलने लगा, "तुम दोनों की दोस्ती बहुत गहरी है। हर किसी के लिए यह एक मिसाल है। तुम दोनों ही इस पानी को क्यों नहीं पी लेते हो। इस पानी को आधा-आधा करके तुम दोनों पी सकते हो।"

खरगोश और बंदर दोनों को हाथी का सुझाव अच्छा लगा। उन्होंने आधा-आधा करके पानी पी लिया और फिर थकान मिटाने के लिए आराम करने लगे।

कहानी से सीख : सच्चे दोस्त हमेशा एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं। सच्ची दोस्ती में स्वार्थ की कोई जगह नहीं होती।

बाल कहानी (हिंदी)

जंगल भ्रमण

रचनाकार :- तेजराम चंद्रा शिक्षक सरहर बाराद्वार

बहुत पहले की बात है रामनगर में चारो तरफ खुशियां मनाई जा रही थी, वहीं पास में ही बहुत सुन्दर जंगल हरियाली की चादर ओढ़ प्रकृति की सुंदरता बया कर रही थी,जो बहुत ही सुन्दर देखने लायक थी।

गांव के जमींदार के घर शादी समारोह आयोजित हुआ था सभी लोगों को भोजन का न्योता मिला था। गांव वाले सभी जानते थे कि पास बहुत सुंदर जंगल है पर जो मेहमान बाहर से आए थे उन्हें इस बात की जानकारी नहीं थी ,समारोह में शामिल हुए लोगों में जंगल भ्रमण करने की बात चल रहीं थीं।

अगले दिन सुबह सभी साथियों के साथ मिलकर जंगल भ्रमण करने निकल रहें थे,तभी बाकी मेहमान भी वहा आकर अपनी सहमति व्यक्त करते हुए बोले हम सभी भी आपके साथ जंगल भ्रमण में जाना चाहते हैं।

फिर क्या था, खुशी का ठिकाना नहीं रहा और मस्त होकर जंगल भ्रमण करने निकल पड़े। चारों ओर आकर्षित करने वाले हरे भरे लहलहाते खेत खलिहान, नदियां, पहाड़ों पर पकडंडी रास्ते,जीव जंतुओं और पक्षियों का मधुर गुंजन सभी साथियों को आनंदित कर रहे थे। सभी मेहमान गांव वालों से बोल रहे थे कि यहाँ और क्या- क्या दुर्लभ जड़ी बूटियां,फल फूल और देखने को मिल सकता हैं।

रामनगर वासियों ने जंगल की राम कहानी सभी साथियों को सुनाया और पूरी जंगल भ्रमण कराते हुए शाम तक सभी वापस लौट आए।सभी लोग इस पल को अपने यादों में शामिल कर अपने- अपने घर चले गए।

शिक्षा - प्रकृति को हम नुकसान नहीं पहुंचाए मिलकर हरा भरा जंगल कटने से बचाएं।

ख्वाहिश

रचनाकार :- प्रिया देवांगन राजिम जिला – गरियाबंद छत्तीसगढ़

मम्मी....मम्मी..... सुनिए न! क्या हुआ मेरी गुड़िया? प्रातःकाल से इतना शोर क्यों मचा रही हो? मम्मी.....मिन्नी स्वरबद्ध होकर बोली और आ कर पीछे से लिपट गई। अच्छा बताओ क्या बात है? मिन्नी बोली– "मम्मी मेरे दिमाग में बहुत अच्छा आइडिया आया है, आज के लिए।" ओह! ऐसा आज कुछ खास दिन है क्या? मिन्नी अपनी आँखें बड़ी–बड़ी कर हैरान नज़रों से मम्मी को देखने लगी; तभी किचन में पापा जी भी आ गए और दोनों से पूछने लगे- "क्या बात है? मां–बेटी में क्या खुसुर–फुसुर हो रही है भई....!" पापा जी थोड़ा मजाकिया अंदाज में बोले। नहीं... नहीं...ऐसी कोई बात नहीं है पापाजी कह कर मिन्नी किचन से चली गई। पापा जी के ऑफिस जाने के बाद मिन्नी बोली– "क्या मम्मी आप भी न..." ऐसा बोलते ही शांत बैठ गई। ओहहो! ठीक है बाबा बताओ, क्या–क्या करना है? मिन्नी ने अपनी मम्मी को पूरी योजना बताई। मम्मी बहुत खुश हुई और बोली एक बिटिया ही तो होती है, अपने पापा के जीवन में हर छोटा–बड़ा सपना को साकार करने में लगी रहती है और बिल्कुल माँ जैसा ख्याल भी रखती है, भाव–विभोर हो मम्मी की आँखें भर आईं।

शाम होते ही पापा जी ऑफिस से घर लौटे, थोड़ी देर बाद मिन्नी पापा जी से बोली- "पापा जी चलिए न मेरे कमरे में;" क्यों? पापा जी बोले। ऐसे ही....कुछ दिखाना है आपको। अच्छा चलो; मम्मी पापा और मिन्नी तीनों कमरे में गए। कमरे में बहुत अंधेरा था। बिटिया लाइट तो जलाओ। धैर्य रखिए बाबा....।

इतनी भी क्या जल्दी है! मिन्नी पापा की लाडली जो थी। ओके बिटिया...। लाइट जलाते ही पापा जी विस्मित भाव से देखने लगे। सहसा फूलों की वर्षा होने लगी, छोटे–छोटे लाइट जुगनुओं की तरह चमकने लगे, नीचे धरती पर मखमली घास बिछी थी, कोयल के सुमधुर आवाज की तरह धीमे स्वर में गाना चल रहा था, एक प्यार का नगमा है| टी–टेबल में बहुत सारी मिठाईयाँ, फल–फूल, केक

वगैरह.... वगैरह....। केक कट करते ही मिन्नी पापा जी को एक गिफ्ट पैकिंग आहिस्ता से खोलने के लिए बोली। पापा जी भी मुस्कुराते हुए आहिस्ता–आहिस्ता खोलने लगे। खोलते ही उनकी आँखें नम हो गईं और मिन्नी को गले से लगा लिया। पिता, बेटी को प्यार भरी नज़रों से देखने लगे। उन्होंने देखा पापा की एक फेवरेट लैपटॉप उनके सामने रखी हुई है।जिसकी पापा जी को बरसों से अभिलाषा थी। बेटा ये लैपटॉप!! ना...ना...पापा जी कुछ न कहिए ये आपके बहुत काम की है, आप दिन–रात, जाग–जाग कर मोबाइल में ही अपनी कविताएं टाइप करते रहते हैं। सो..... मैंने और मम्मी ने सोचा क्यों न पापा जी को सरप्राइज दे दें। पापा जी बोले– "आज मेरी बेटी इतनी बड़ी हो गई की पापा की ख्वाहिश पूरी कर रही है!" मिन्नी पापा को गले लगा कर जन्मदिवस की बधाई देती हुई, हैप्पी बर्थडे पापा...हैप्पी बर्थ डे माई डियर पापा जी...!

तभी कानों में मम्मी की आवाज सुनाई देने लगी | मिन्नी अरी ओ गुड़िया, उठो! बेटा भोर हो गई। कितनी देर तक सोयेगी, ये लड़की भी न, पता नहीं आज इसे क्या हो गया? मिन्नी की आँखें खुलीं, चहुँओर सन्नाटा छाया था। जो कुछ भी हुआ एक स्वप्न था। मिन्नी, मम्मी को गले लगाती हुई अपने पापा को याद कर सिसकियां भर–भर कर रोने लगी।

सांप और सपेरा

रचनाकार :- बद्री प्रसाद वर्मा गोरखपुर उ. प्र.

बहुत समय पहले की बात है | रुद्रपुर गांव में दीनू नाम का एक सपेरा रहता था। वह बहुत गरीब था वह बचपन से सांप को पकड़कर उसका खेल दिखाया करता था। इसके बदले उसे रुपया पैसा जो भी मिल जाता उससे अपना और अपने परिवार का जीवन यापन करता था।

एक रोज सपेरा जंगल में सांप पकड़ने गया हुआ था। सांप खोजते खोजते सुबह से दोपहर हो गई मगर कोई सांप नहीं मिला सपेरा बहुत निराश हो गया और एक बरगद के पेड़ के नीचे बैठकर थोड़ा आराम करने लगा। इतने में सामने की झाड़ी से एक काला नाग निकला,काला नाग को देख कर सपेरा बहुत खुश हुआ और उसे पकड़ने के लिए उठ कर चल दिया।

कुछ ही देर में सपेरा ने काले नाग को पकड़कर अपने पिटारे में बंद कर लिया। इतने में पिटारे के अंदर से काला नाग बोला अगर तुम हमें आजाद कर दोगे तो मैं तुमको ढेर सारा नासमणी दे कर दौलत से माला माल कर दूंगा। सपेरा कालेनाग की बात मानकर उसे अपने पिटारे से आजाद कर दिया। काला नाग पिटारे से बाहर आ कर बोला तुम यहीं बैठो मैं अभी अपने बाबी से नागमणी ला कर देता हूं। इतना कह कर सांप झाड़ी में चला गया।

कुछ देर के बाद काला नाग एक थैले में ढ़ेर सारा नागमणी सपेरे को दे कर बोला तुम इसे बाजार में बेचोगे तो तुमको मुंह मांगी दौलत मिल जाएगी। उस दौलत से तुम अपना कोई व्यापार शुरु कर सकते हो। काले नाग की बात सुनकर सपेरा बहुत खुश हुआ और वह नागमणी लेकर जंगल से वापस घर आ गया।

नागमणी को बेचकर सपेरा बहुत सारा धन प्राप्त किया और उससे अपना व्यापार शुरु कर के सुख से जीवन व्यतीत करने लगा।

सब्जियों की होली

रचनाकार :- बद्री प्रसाद वर्मा गोरखपुर उ. प्र.

एक किसान का खेत था। उसमें तरह तरह की सब्जियां लगी हुई थी। एक रोज बैगन सभी सब्जियों से बोला परसों होली है,गांव के सारे बच्चें बड़ बुढ़े सभी आपस में मिलकर होली खेलेंगे उनको देखकर मेरा भी मन होली खेलने को लालायित हो जाता है। मैं चाहता हूं इस साल हम सारे सब्जियां मिलकर आपस में क्यों न होली खेली जाए। बैगन की बात सुनकर आलू गोभी मटर मूली शलजम पालकी परवल बंडा भिन्डी नेनुआ शिमला मिर्च लौकी कटहल कोहडा बोढा टमाटर करैला और घेवडा सभी होली खेलने को तैयार हो गए।
"तभी लौकी बोला हम रंग और पिचकारी कहां से लाएंगे?"

सबको रंग और पिचकारी की चिन्ता करने की कोई जरुरत नहीं है। मैं रंग अबीर गुलाल और पिचकारी किसान से कह कर बाजार से मंगा लेंगे। बैगन सबसे बोल उठा। तब खेत पर किसान आ गया और खेत में पानी चलाने लगा।
पास खड़ बैगन ने किसान से बोला किसान चाचा मैं बैगन बोल रहा हूं मेरी आप से निवेदन है कि आप हम सारे सब्जियों के लिए बाजार से रंग अबीर गुलाल और पिचकारी ला दीजिए। इस साल हम सारी सब्जियां होली खेलेंगे।
बैगन की बात सुनकर किसान बहुत खुश हुआ और बोला कल बाजार से सबके लिए रंग अबीर गुलाल और पिचकारी ला दूंगा फिर तुम सब जी भर के रंग खेलना।
किसान चाचा की बात सुनकर सारी सब्जियां खुशी से हंसने लगी।
होली के दिन सारे सब्जी खेत की नाली में जमा पानी में अपने अपने रंग घोलकर एक दूसरे पर पिचकारी से रंग डाल कर और अबीर गुलाल लगा कर होली मनाने लगे।
सब्जियों को होली खेलते देख कर किसान बहुत खुश हुआ और सबको होली की ढेर सारी शुभकामनाएं देने लगा।

गुलाब का पौधा

रचनाकार:- हिना सार्वा सुरसूली बालोद

तेरह साल का रघु और उसकी मां की आवाज घर के आंगन में गूंज रही थी। रघु की मां अपने घर के घेरे वाले दीवार पर लगे गुलाब के झाड़ को काटने के लिए अड़ी थी जबकि रघु को उस पौधे से बहुत प्यार था तो वह अपनी मां से पौधे को काटने से रोकने की जिद में था। दोनो की आवाज सुनकर रघु के पिताजी वहां आ जाते है, रघु रोते हुए अपने पिताजी से लिपट जाता है और कहता है "देखो न पिताजी मां गुलाब के पौधे को काटना चाहती है।" उसके पिता फिर रघु के मां से पूछते है "क्यों काट रही हो गुलाब के पौधे को?" रघु की मां कहती है कि "गुलाब के पौधे में बहुत कांटे हो गए है और इसके तने पूरे दीवाल में फैल रहे है।" रघु के पिता कहते है "रहने दो न क्या हो जाएगा।" रघु की मां भुनभुनाते हुए कहती है "तुम लोग तो घर को जंगल ही बना दोगे" और फिर पौधा काटने का विचार छोड़ वह घर के अंदर चली गई। रघु भी गुलाब के पौधे को एक बार देख के खेलने चला गया।

रात में सब खाना खा के सो जाते है। पूर्णिमा की आधी रात में तीन चोर आते है। तीनो अलग अलग दिशा से घर में घुसने की कोशिश करते है। उनमें से एक चोर घर में घुसने के लिए घेरे वाले दीवाल में चढ़ने की कोशिश करता है लेकिन उसे गुलाब का कांटा चुभ जाता है। इससे वह तिलमिला कर नीचे गिर जाता है। गिरने की आवाज सुनकर रघु के पिता और मां बाहर आते है और चोर को देखकर चिल्लाने गले है। चिल्लाने की आवाज से पड़ोसी आ जाते है। पड़ोसियों की मदद से उन्हें पुलिस के हवाले कर दिया जाता है।

सुबह जब रघु नींद से उठता है तो उसकी मां उसे पूरा बात बताती है और कहती है "अच्छा हुआ बेटा कल तुमने मुझे गुलाब का पौधा काटने से रोक लिया। ये पेड़ पौधे हमारे माता पिता के समान हमे पालते है और हमारी सुरक्षा भी करते है।" ये बात सुनकर रघु खुश हो जाता और साथ ही आंगन में गुलाब का सफेद फूल भी सूरज की रौशनी में चमकने लगता है।

पंखों की ताकत

रचनाकार : - अर्चना त्यागी मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

"नानू फिर से एक अच्छी कहानी सुनाओ ना।" तरु, अरु दोनों आकर नानू की गोद में बैठ गई।" पहली वाली बहुत अच्छी थी। ये भी अच्छी सुनाओ ना।" अरु उछलते हुए बोली। "नानू मुझे ना चिरैया की स्टोरी सुननी है। वो जो उड़ती है ना।" अरु ने आकाश की ओर उंगली उठाकर कहा। नानू आज़ पार्क में बेंच पर बैठे थे। तरु अरु वहीं पर आ गई थी। स्टोरी की बात सुनकर और भी बच्चे उनकी बेंच के पास वाली बेंच पर आकर बैठ गए। नानू बच्चों को समझाना चाहते थे लेकिन सब चिरैया की कहानी सुनाने की ज़िद कर रहे थे।
"एक जंगल में एक बार आग लग गई। भयानक आग। सभी जंगली जानवर जंगल छोड़कर भाग गए। जिसे जहां भी ठिकाना मिला वो वहीं पर चला गया। सबके घोंसले जलकर राख हो गए। घोंसले बनाने वाले पेड़ भी धू धू कर जल रहे थे। भारी मन से सभी पशु पक्षी जंगल से दूर भाग रहे थे। सब तरफ बस आग की लपटें ही दिखाई देती थीं। आग बुझाने वाला कोई नहीं था। जंगल से थोड़ी ही दूरी पर एक तालाब था लेकिन पानी लाकर आग बुझाने वाला कोई नहीं था। परंतु एक चिड़िया जंगल छोड़कर नहीं गई।
" उसको डर नहीं लगा ?" तरु ने तुरंत सवाल किया। " आग में उसके पंख जल जाते तो।" अरु ने भी अपनी शंका नानू के सामने रखी। नानू मुस्कुराकर बोले," सभी जानवर चिड़िया से यही पूछ रहे थे।," क्यों अपनी नन्हीं सी जान जोख़िम में डाल रही हो ? तुम्हारा घोंसला जल गया है। जिस पर घोंसला बना था वो पेड़ भी जल रहा है, फिर तुम उड़ क्यों नहीं जाती हो ?" चिड़िया ने कोई जवाब नहीं दिया बस

उड़कर जाती, तालाब में नहाती और धू धू कर जलते हुए जंगल के ऊपर से उड़कर अपने पंखों को झटक देती। उसके साथ वाले पक्षी उड़ते उड़ते पूछ रहे थे।," घोंसला टूटने से बावली हो गई है। कहीं इसके पंखों के पानी से जंगल की आग बुझ पाएगी ? बस पंख जलाकर रह जायेगी।" चिड़िया बिना रुके अपना काम करती जा रही थी। तालाब में पंखों को भिगोती और पानी आग पर झटक देती। यही काम बहुत देर तक चलता रहा। सभी जानवर जंगल छोड़कर चले गए। पक्षी भी उड़ गए परंतु चिड़िया कहीं नहीं गई। बहुत देर बाद फायर ब्रिगेड वाले आ गए। फिर भी चिड़िया अपना काम करती रही। एक चिड़ा आसमान में उड़ रहा था। तालाब में पंख भिगोती चिड़िया के पास पहुंच कर बोला," चिरैया तुम्हारे पंखों पर लगे थोड़े से पानी से जंगल की आग नहीं बुझेगी ये तुम भी जानती हो फिर भी यहां से जा नहीं रही हो। क्या बात है? क्या तुम आत्मदाह करना चाहती हो ?"

चिड़िया ने उड़ते उड़ते जवाब दिया," तुम सही कहते हो मेरे पंखों के पानी से जंगल की आग नहीं बुझेगी लेकिन मेरे इस प्रयास से मेरा नाम उन लोगों में नहीं गिना जाएगा जो आग से बचने के लिए जंगल का साथ छोड़ गए। उनमें भी नहीं आएगा जिन्होंने जंगल में आग लगाई है।" तरु अरु और उनके साथ बैठे सब बच्चे चुप थे। बड़ी उत्सुकता से नानू का जवाब सुनना चाहते थे कि चिड़िया ऐसा क्यों कर रही थी?

चिड़िया का जवाब था," मेरा नाम जंगल की आग बुझाने वालों में आएगा। जंगल को बचाने वालों में आएगा। बस इसलिए मैं अपने पंखों से आग बुझाने की कोशिश कर रही हूं।" कहकर चिड़िया उड़ गई।

बच्चों यह ज़रूरी नहीं कि हम कोई बड़ा काम करें। महत्वपूर्ण यह है कि उपयोगी काम करें जो सबके हित में हो और सभी को प्रेरणा दे सके।" नानू ने कहानी ख़त्म करते हुए कहा।

बच्चे बहुत खुश थे। अगली कहानी सुनने का वादा करके सब अपने अपने घर चले गए।

पंख वाली मछली

रचनाकार :- प्रीतम कुमार साहू,शिक्षक,भिलाई,दुर्ग

एक जंगल में एक तालाब था। जिसमें बहुत सारी मछलियाँ रहती थी। उसी तालाब में सोन मछली अपने बच्चों के साथ मस्त मजे से रहती थी। बारिश का मौसम आया खूब बारीश हुई। नदी तालाब सब भर गए। सोन मछली अपने बच्चों के साथ खूब मजे से रहने लगी। धीरे धीरे मौसम बदलने लगा।

बारिश के मौसम के बाद गर्मी का मौसम आया। नदी,तालाब सूखने लगे। जीवन संकट गहराने लगा। सोंन मछली जान बचाने को सोचने लगी। तभी उनको एक उपाय सुझा।

सोन मछली जान बचाने के लिए उड़ कर दूसरे पानी वाले तालाब में जाना चाहती थी। पर

उनके पास तो उड़ने वाला पंख नहीं थे। तब वह पानी से ऊपर आकर देखा। उनको एक बतख पानी पर तैरते दिखाई दिया। उसने बतख से कहा आप अपना पंख मुझे दे दीजिए मैं अपने बच्चों को पानी वाले किसी दूर के

तालाब में ले जाना चाहती हूँ क्योंकि इस तालाब का पानी दिनों दिन कम हो रहा है।

बतख ने कहा नहीं नहीं मैं अपना पँख नहीं दे सकती। पंख बिना तो मेरा जीवन अधूरा है।

बतख की बात सुनकर सोन मछली को गहरा आघात लगा। पर वह निराश नहीं हुई वह हार नही

मानी। फिर सोचने लगी।तभी दूर उन्हें एक बगुला दिखाई दिया। सोनमछली डरते डरते बगुला के पास गयी। उसने बगुला से कहा आप मुझे अपना पंख दे दीजिए। मैं अपने बच्चों को दूर किसी

पानी वाले तालाब में ले जाना चाहती हूँ।

बगुला ने मछली से कहा आप डरो मत। आप मुझे अपना दोस्त समझों। बगुला सोनमछली की बातों को समझा और मदद के लिए आगे आया।अब बगुला अपना पंख निकाल कर सोनमछली को दे दिया।

अब सोन मछली बगुले का पंख लगाकर पंख वाली मछली बन गई। अब सोंन मछली अपने

बच्चों को पीठ में बैठाकर उड़ने लगी। उड़ते उड़ते उन्हे एक तालाब दिखाई दिया।जो पानी से लबालब भरा हुआ था। सोन मछली अपने बच्चे को उस तालाब में छोड़कर वापस उसी तालाब में लौट आई। और अपना पंख निकालकर उस बगुला को दे दिया। इस तरह सोन मछली ने अपने बच्चों की जान बचाई

शिक्षा:- कठिन समय में जो हमारा साथ दे वही हमारा सच्चा मददगार होता है।

जादुई घड़ी

रचनाकार :- सुंदर लाल डडसेना शास.प्राथमिक शाला केंदुढार, सरायपाली जिला महासमुंद

बिल्लू के पास एक जादुई घड़ी थी। जब भी वह घड़ी की घंटी बजाता,वह जहां चाहता वहां चला जाता। एक दिन बिल्लू ने सोचा कि वह इस घड़ी की सहायता से अपने गाँव के बाहर जाकर जापान देश देखने जाएगा। वह तुरंत घड़ी की घंटी बजाई और जापान पहुंच गया।

वहां पहुंचकर उसने देखा कि जापान में सब कुछ बहुत ही अजीब है। लोग अलग-अलग प्रकार के कपड़े पहनते थे और भाषा भी बिल्कुल अलग थी। बिल्लू ने सोचा कि यहां रहकर उसे कितना मजा आएगा। उसने दिनभर जापान की यात्रा की और बहुत सारे नए दोस्त भी बनाए। शाम को उसने घड़ी की घंटी बजाकर अपने गाँव वापस आ गया।

बिल्लू ने अपने दोस्तों को जापान की यात्रा के बारे में सुनाया और उन्हें सबको बहुत पसंद आया। उसके दोस्त भी चाहते थे कि उन्हें भी ऐसी ही जादुई घड़ी मिले। बिल्लू ने समझाया कि वास्तव में जादुई घड़ी नहीं होती है, बल्कि सपनों को पूरा करने के लिए मेहनत और लगन की जरूरत होती है। उसने अपने दोस्तों को यही सिखाया कि सपने सिर्फ जादूगरों की दुनिया में ही नहीं होते, बल्कि हर किसी के दिल में होते हैं।

छत्तीसगढ़ी कहानी

झन बताबे

रचनाकार :- भोलाराम सिन्हा, कमारिनमुड़ा करेली छोटी वि०ख०-मगरलोड जिला -धमतरी

जिनगी म घाम-छइहाँ, सुख-दुख, आवत-जावत रथे। जिनगी म दुख के बाद सुख आथे त सुख के आनंद अपार होथे, अउ कहूँ सुख के बाद दुख आथे त जिनगी बिताना मुसकिल हो जथे। जिनगी करेला अउ नीम कस करु होथे त कभु शक्कर अउ गुड़ कस मिट्ठ होथे। तभे तो मोहनी के जिनगी ह गुड़-शक्कर के चासनी म पगाय सुख म बीतत रिहिस। कोनजनी ओकर जिनगी ल काकर नजर लग गिस। ओकर जिनगी म दुख के बदरी छाय लागिस। रातकुन मोहनी राँध-गढ़ के अपन गोसइया ल देखत रथे जेवन जेय बर। अब आही...तब आही ...कहिके। सोहन अब पहिली असन बेरा म घर नइ आवय, तेला मोहनी जानत हावय फेर बपुरी काय करय, नारी-परानी के जात..। अपन गोसइया के पहिली कभू जेवन नइ जेय हे अतका दिन होगे। थोरिक बेर के गेय ले खट-खट मोहाटी के कपाट बाजिस। मोहनी जान डारिस, मोर गोसइया आगे कहिके। कपाट ल हेरिस। सोहन लड़भड़ावत-लड़भड़ावत घर म आइस | "तेंहा आज फेर पी के आय हस जी।" "पीहूँ नइ त काय करहूँ, दिनभर ट्रेक्टर चलाथँव, तेला नइ जानस का ?" लड़भड़ावत सोहन किहिस।

सोहन के गोठ ऊपर मोहनी किहिस-"आज महिना के दूसर दिन आय, मालिक ह आज के दिन तोला पगार देथे। तोर खिसा ल देखा तो जी। देखन दे। हाय दई ! करम फाटगे मोर। एके हजार रुपया बचाये हस ? बाकी पइसा मन कति गय ? कहूँ तेंहा जुवाँ-चित्ती खेल के तो

नइ आय हस ? "हाँ... हाँ... मेंहा जुवाँ-चित्ती तको खेल के आय हँव, का करबे मोर तेंहा ?" सोहन तमतमावत किहिस- "जा तेंहा भात खा ले। मेंहा खा डारे हँव।" काहत करु-करु गोठियात; अउ लड़भड़ावत अपन कुरिया म जाके खटिया म सुतगे।

मोहनी अगास के चंदा संग जम्मो चंदैनी ल देखत अंगना के खटिया म सुते-सुते सुरता म बुड़गे। सोहन मोला अड़बड़ मया करे। कभू पियई-खवई अउ जुवाँ-चित्ती खेलई ल नइ जानय; भलुक दूसर मनखे मन ल बरजे। हम दुनो परानी चिरई-चुरगुन के चींव-चींव ले उठन भिनसरहा। चिरई-चुरगुन के चींव-चींव ह अलारम घड़ी कस तो आय। दूध के चाय बना के देंव, काबर कि वोहर दूध वाले चाय ल अड़बड़ पसंद करे। गाँव म बरदी चराय बर हर बछर लगे। बरदिहा के अउ का बुता... बरदी चराय के ताय। सबो गाय-गरु मन ल सकेल के खइरखाडाँड़ म लेगे। सोहन गाय-गरु मन ल अड़बड़ मया करय। सिरतोन म वोहा गाय-गरू ल मनखे कस मया करय। समुंदर ले गहिरी मया बाँटय। दुहनी म दूध ह समुंदर कस कभू लहरा नइ लेवे। गाय के थन कभू नइ पोचके। गाय अउ बछरु के आँखी म कभू आँसू आवन नइ दिस। अपन मालिक ल तको कभू निरास नइ करिस। अइसन समझदार रिहिस। मोर आदमी बर कभू चीला रोटी, मुठिया रोटी, अंगाकर रोटी बनाव तेला खा के बरदी चराय बर जाय। मँझनिया ओकर पसंद के साग राँधव। कभू-कभू करेला, ता कभू कढ़ी राँधके लेगँव। चाट-चाट के खाय। ताहन चटकारा मारत बिधुन होके सुग्घर दोहा सुनाय। "नंद बाबा के नौ लाख गइया अउ गली म दूध बोहाय।" दूध दही के पुरा बोहाय रे, लेवना के पार बँधाय।" दोहा सुनत-सुनत गोबर बिनँव। छेना थापँव। मोर आदमी के स्वभाव अड़बड़ सुग्घर रिहिस। तेखरे सेती ओकर सबो मालिक मन ओला भाय। दुनो परानी कभू-कभू मालिक मन ल छुट्टी माँग के मड़ई देखे बर जावन। तेंदु के लउठी धरे, धोती-कुरता पहिने अउ मुड़ म पागा बाँधे बड़ सुग्घर दिखे। हाथ म ललहूँ चुरी, ललहूँ लुगरा, कान म खिनवा, नाक म नथनी, गला म सुता,,गोड़ म साँटी मोला बड़ खुलय। "तोर हाँसी ले मोती झरथे, अउ बोली ले मंदरस टपकथे"। अइसने तो काहय ओहा। अवइया-जवइया मन देखते रहि जाय। दुरिया ले मड़ई के आरो मिलत राहय। गरम-गरम जलेबी ले लो...। गरम-गरम बरा भजिया खा लो...। फुग्गा लेलो...फुग्गा..। मड़ई म पहुँचते बड़ जोर से पियास लागिस।

दुनो झन एक ठन होटल म गेन। "पानी देतो भइया बड़ जोर से पियास लागत हावय", हलु-हलु वोहा किहिस। ओखर गोठ ल सुन के होटल वाला के गोसाइन किहिस - "बरा-भजिया तको खाहू कि पानी भर ल पीहू "बरा-भजिया तको खाबोन दीदी फेर पहली पानी पीये बर दे।" मँय कहेंव। पानी निकाल के दिस। दुनो झन पानी पीयेन त जीव ह जुड़इस। गरम-गरम बरा-भजिया खाके ससन भर मड़ई किंजर-किंजर के देखेन। रइचुली तको झुलेन। रइचुली के आवाज बड़ नीक लागे। रिकिम-रिकिम के जिनिंस बिसाएन। ओ दिन आज घलो सुरता हावय। जेन दिन ईटा ठेकेदार के ट्रेक्टर ड्राइवर गोलू ह मोर जिनगी म जहर घोले बर सँझा कुन दूध माँगे बर आइस अउ किहिस- "सोहन भइया तेंहा तो बने ट्रेक्टर चलाय बर सिखगे हावस।" मेंहा ये गोठ ल सुन के अकचका गेंव, कब ट्रेक्टर चलाय बर सिखगे कहिके? तब गोलू बताइस -"बरदी चरात-चरात मोर संग ईंटा भट्ठा कन बइठे। मेंहा ओला रोज एकक कन चलाय बर सिखोवँव।" भौजी तोला आज ले भइया ह नइ बताय हे ? वोहा गोठ ल टारत किहिस - फुरसत म बताहूँ कहिके नइ बताय रेहों मोहनी। "ले दूध के चाय बना मोहनी | "हव" "ए दे चाय। अदरक, लौंग, लइची डार के बनाए हँव।" मोहनी किहिस मुड़ ढाँकत। अउ दुनो झन ल दिस।

"सोहन भइया ते अब बरदी लगे बर छोड़ दे।" चाय पीयत-पीयत गोलू किहिस। बरदी नइ लगहूँ त काय करहूँ जी। मोर पेट- रोजी कइसे चलही? मेंहा नइ छोड़ सकव जी।" सोहन किहिस। "बरदी चरा के आज तक कोनो धनवान बने हे जी सोहन ?" पेट अउ पीठ भर चलत हे तुँहर। मोहनी भौजी बर न बने ढंग ले कपड़ा लत्ता, सोन, चाँदी, बिसा सकत हस; अउ न तो बने घर बना सकत हस ? मोर ठेकेदार के ट्रेक्टर ल तो चला। बने पइसा कइसे नइ कमाथस, तेला मँय देखथँव। "बरदी चरात हँव, तिही म बने जियत खात हन भइया। लालच नइ करना हे।लालच के घर खाली होथे।" सोहन मुचमुचावत किहिस। "बने सोच-बिचार ले सोहन", काहत ओकर जेब ल रुपया ले गरम कर दिस अउ किहिस- "काली बताबे।" सोहन के मन म लालच आगे। कोनो भी मनखे के मन म लालच आइस ताहन ओ मनखे के मरे बिहान ताय। लालच म सोहन के सोचे-बिचारे के शक्ति कम होगे; अउ तुरते किहिस- "येमे काली बताय वाला का बात हे ? अभी बतावत हँव। मेंहा ट्रेक्टर चलाय बर राजी हँव। फेर मोर कमाय के दिन ह एक महीना बाचे हावय। ले का होही। बन जही।" मुचमुचाय लागिस अउ दूध ल धर के चल दिस। गाँव भर म सोर होगे कि सोहन ह बरदी लगई ल छोड़ही कहिके।

एक दिन गाँव के सियान सुखउ ह सोहन ल समझाइस - "बेटा सोहन, पहाटिया लगे बर झन छोड़। तुँहर पुरखौती के बुता आवय। इही बुता ले तोला गाँव भर के मनखे मन जानथें ; अउ गोठियाथे कि सोहन राउत असन बरदी चरइया ये करा एको झन नइ हे। बेटा तोर छाती गरब म फूलना चाही। बेरा राहत ले जाग जा बेटा, नइते पाछू पछताबे।" मोर गोसइया पीये बर अउ जुआँ-चित्ती खेले बर कब सिखिस, पार नइ पायेंव। केहे गेहे न हरही के संग कपिला के बिनास। गोलू हमर घर के धुर्रा बिगाड़ दिस।छानी ले रच-रच के आरो आथे। मोहनी झकनकाके उठ जथे। देखथे त बिलई छानी म दउड़त रथे। घड़ी ल देखथे, रात के दू बजगे राहय। बपुरी लाँघन सुतगे।

एक बखत मोहनी के तबियत खराब होइस। मनखे के जात तबियत कभू-कभू ऊँच-नीच होत रथे।

मोहनी किहिस- "मोर तबियत बड़ जोर के खराब हावय जी। चल डॉक्टर कन जाबो। "तोर तो एकक कन बर डॉक्टर ए....। सोहन ह बड़बड़ाय लागिस-मोला आज नइ उसरत हे।" एकात दिन जाबो कहिके रेंग दिस। बपुरी मोहनी मन म गाँठ बाँध डारिस। "भइगे मेंहा अपन दाई घर जाहूँ। उही कोती इलाज करवाहूँ", काहत घर ले दु-चार ठन कपड़ा-लत्ता ल झोला म धर के निकलगे। वो रेंगत-रेंगत जावत रिहिस। उही रद्दा म एक झन फटफटी वाला फक-फक ले उज्जर, गोल सकल, हाँसत बदन, जवनहा मनखे आवत रिहिस। तेला मोहनी रुके बर किहिस।

फटफटी वाला गाड़ी ल रोकिस। "भइया तेंहा भाठागाँव जावत हस का ?" मोहनी किहिस। "हव बहिनी।" फटफटी वाला किहिस।" "महूँ ल भाठागाँव जाना हावय। भइया फटफटी म बइठार ले। "हव बहिनी..., काहत फटफटी म बइठारिस। एती सोहन काम करके आइस। मोहनी घर म नइ रिहिस। गली म सुकवारो ह झींटी-झाटा लकड़ी बोही के आवत रिहिस। सोहन पुछिस- "सुकवारो तोर काकी ल देखे हस का ओ ? "हव।" ओ तो आमा बगीचा डाहर लकर-धकर जात हे।" सुकवारो बताइस।सोहन तुरते अपन फटफटी ल देखाय रद्दा म दउड़इस। फटफटी ल अइसे दउड़ावत रिहिस कि जानो-मानो ओखर फटफटी ह हवाई जहाज आय।मोहनी ललहूँ लुगरा पहिरे रिहिस। सोहन दुरिया ले चिन्ह डारिस। मोहनी ...मोहनी...ए मोहनी, ए फटफटी वाला रुक... रुक.... करके चिल्लावत रिहिस। अउ टीट ...टीट ... हार्न ल बजावत रिहिस। आवाज ल सुन के फटफटी वाला के जीव ह धुक ले करिस। डर के मारे बपुरा फटफटी ल रोकिस। "काय भइया, काय होगे जी काबर चिल्लावत हस ?" फटफटी वाले किहिस। "तेंहा मोर गोसइन ल कहाँ लेगत हस रे ?" किहिस अउ उनिस न गुनिस एक झाफड़ जमा दिस। अउ मारे बर धरत रिहिस। मोहनी लटपट छोड़ाइस अउ अपन गोसइया ल किहिस- मोर बात ल सुन तो ले,मेंहा अपन मर्जी ले येकर संग अपन दाई घर जात रेहों,तेंहा बिना सोचे समझे एक झाफड़ जमा देस।मोहनी अपन गोसइया ल माफी माँगे बर किहिस। सोहन माँफी नइ माँगिस, तब मोहनी अपन गोसइया कोती ले माँफी मागत वो फटफटी वाले भइया ल कथे-"भइया ए घटना ल कोनो ल झन बताबे।"फटफटी वाला कथे- "काबर नइ बताहूँ ? मोला मारे हे तेला, नइ जानस का बहिनी ?"

मोहनी कथे- "बहिनी केहे हस त, बहिनी के लाज ल रखबे भइया। ए घटना ल कोनो ल झन बताबे "मेंहा जान डारेव बहिनी। ए घटना ल काबर कोनो ल झन बताबे काहत हस तेला। फटफटी वाले काहन लागिस। ए घटना ल कोनो ल बता दुहूँ त कोनो रद्दा रेंगइया दुखयारी मइलोगन मन के कोनो सहायता नइ करही।भइया केहे हस त मोर एक ठन सवाल हे बहिनी।" "बता न भइया, का सवाल ए ? "ये मंदहा अपन जिनगी म कभू सुधरही ? मोला भगवान उपर भरोसा हावय भइया कि मोर जिनगी म एक न एक दिन अँजोरी जरूर आही। मोर गोसइया एक न एक दिन जरुर सुधरही। ओखर आँखी जरुर खुलही। घुरवा के दिन घलो बहुरथे। ओइसने मोरो जिनगी ह बहुरही। धीर म खीर हे। दाई-ददा मन के तको लाज ल राखना जरुरी हे। मन के हारे हार अउ मन के जीते जीत।मोहनी के सुग्घर गोठ ह फटफटी वाला भइया के अंतस म समाय लागिस। बहिनी बर मया पलपलाय लागिस। दुख दरद अउ घुस्सा ह कमती होय लागिस। "मोर एक ठन बात हे, मानबे त बताहूँ। "का बात भइया?" "तोर गोसइया ल बने समझाबे। कोनो भी मनखे ल बिना सोचे समझे मारे के नोहे कहिके।" "हव भइया"। मुड़ ल ढाँकत मोहनी किहिस |

फटफटी वाला अउ मोहनी के गोठ ल सुन के सोहन ल अपन गलती के एहसास होइस | ओकर बाद सोहन ह फटफटी वाला ले माफी माँगिस अउ किरिया खइस कि मँय गलत रद्दा ल छोड़ के अपन घर परिवार के सुख,शांति अउ समृद्धि म धियान दुहूँ। अब एती मोहनी ल कोनो शिकायत के मौका नइ देवँव।

मोहनी सोहन के बात ल सुनके के फटफटी वाला ल किहिस - "सुने भइया, मँय केहे रेहेंव न, मोला भगवान उपर पूरा भरोसा हे कहिके। भगवान मोर बिनती ल सुन लिस।" फटफटी वाला, "हव बहिनी कहिके..." मोहनी के केहे गोठ ल गाँठ बाँधके अपन रद्दा म चल देथे।

आलेख

किसकी गलती

रचनाकार : - अर्चना त्यागी मुजफ्फरनगर, उत्तर प्रदेश

सालों से एक महत्वपूर्ण रिसर्च चल रही थी। प्रत्येक पहलू को देख परखकर रिसर्च पेपर तैयार किए गए थे। सर ने सारी रात जागकर अपने रिसर्च पेपर पढ़े और उनमें जो भी परिवर्तन होने चाहिए थे वो लिख कर रखे। पिछली कई रातों से यह काम चल रहा था। एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय पर की गई उनकी रिसर्च दुनिया के समक्ष आने वाली थी। इस परियोजना के पीछे उनकी सालों की मेहनत थी और समाज के लिए बहुत ही उपयोगी होने वाली थी। उन्होंने कुर्सी पर बैठे बैठे गर्दन को पीछे की ओर लटका दिया। उनका प्यारा कुत्ता तुरंत उठ खड़ा हुआ और भोंक भोंक कर उनके प्रति अपनी चिंता व्यक्त करने लगा। जितनी रातें सर ने जागकर बिताई थी उतनी ही उसने भी बिताई थी। सर जब तक घर में होते वह उनका साथ एक पल के लिए भी नहीं छोड़ता था। रात में तो विशेष रूप से उनकी कुर्सी के पास ही आकर बैठ जाता। दुम हिलाता रहता। सर कुर्सी से उठ जाते तो तुरंत उठ जाता और उनके पीछे पीछे भागने लगता।

सर का वह प्यारा कुत्ता था। शायद दुनिया में सबसे ज्यादा प्यार उसे ही करते थे। उन्हे इंसानों से उतना प्यार मिल ही नहीं पाया था जितना इस जानवर ने दिया था। समय से पहले ही पैदा हो गए तो डॉक्टरों ने घोषित कर दिया कि अधिक समय जीवित नहीं रहेंगे। पैदा होने से कुछ महीने पहले ही पिता की मृत्यु हो गई। बच तो गए लेकिन मां ने तीन साल की छोटी अवस्था में दादी के पास छोड़ दिया और किसी दूसरे व्यक्ति से विवाह कर लिया। न पढ़ लिख पाए और न ही दूसरे बच्चों की तरह बचपन ही बीता। अपने गांव में घूमते फिरते। खेतों पर काम करते। एक चाचा थे जिनसे थोड़ा बहुत अपनापन मिल जाता था। बचपन और किशोरावस्था ऐसे ही गुजर गई। दूसरे पति की मृत्यु हुई तो मां वापिस अपने बेटे के पास लौट आई। पढ़ने के लिए एक स्कूल में दाखिला भी करवा दिया। लेकिन इस उम्र में कुछ समझ ही नहीं आता था सर को। सब विद्यार्थियों से बड़े थे उम्र में। सभी उनका मज़ाक उड़ाया करते थे। परेशान होकर मां ने स्कूल से निकलकर फिर से खेती के काम में लगा दिया। स्कूल के शिक्षक यह जानते थे कि सर होनहार विद्यार्थी हैं लेकिन पढ़ते वही हैं जिसमें उनकी रुचि है। सर की माताजी से उन सबने मिलकर प्रार्थना की और बड़ी मुश्किल से उन्हें वापिस स्कूल में लाए। इस बार सर ने मन लगाकर पढ़ाई की और मां को शिकायत का मौका नहीं दिया। गणित, भौतिक विज्ञान और खगोल शास्त्र पर अपनी पकड़ मजबूत की और प्रोफेसर साहेब बन गए। तबसे समाज के कल्याण के लिए नई नई रिसर्च कर रहे थे।

सर ने अपने कुत्ते को गोद में बिठाया और खूब प्यार किया। फिर नीचे उतरकर बाहर लॉन में टहलने चले गए। उन दिनों बिजली नहीं हुआ करती थी। लैंप मेज़ पर रखा हुआ था और कागज़ बेतरतीब तरीके से मेज़ पर बिखरे हुए थे। कुत्ते को मस्ती सूझी। रात भर कुर्सी के पास चुपचाप बैठा रहा था लेकिन अब कैसे खुद को रोकता। उछल कूद शुरू कर दी। मेज़ पर भी कूद रहा था। पेपर इधर उधर गिर पड़े लेकिन एक बार ऐसा कूदा कि जलता हुआ लैंप कागजों के ऊपर गिरा और देखते ही देखते पेपर जलकर राख हो गए। फिर घबराकर सर को बुलाने दौड़ा।

सर ने अंदर का नज़ारा देखा तो सिर पीट लिया। उनकी सालों की मेहनत जलकर राख हो चुकी थी। उन्हे कुत्ते पर बहुत क्रोध आया। मन हुआ कि उसे उठाकर फेंक दें लेकिन फिर सोचा गलती मुझसे भी हुई है। इस तरह कागजों को बिखरे हुए छोड़कर बाहर नहीं जाना चाहिए था। जलते लैंप के पास तो बिलकुल भी नहीं। कुत्ते को गोद में उठाया। वह उन भाव भंगिमा देखकर बुरी तरह डर गया था। उसे सहलाते हुए बताया। "तुम नहीं जानते दोस्त तुमने अनजाने में मेरा कितना बड़ा नुकसान कर दिया है।" कुत्ता सिर झुकाकर दुम हिलाने लगा। अपनी कुर्सी पर बैठ गए और जो भी याद आता गया लिखते चले गए। कई दिनों तक लगातार यही क्रम चलता रहा। पूरी रिसर्च उन्होंने अपने मस्तिष्क में संजोए हुए बिंदुओं के आधार पर वापिस लिखी और खगोलशास्त्र तथा भौतिकी के कई महत्वपूर्ण सिद्धांत दुनिया को दिए। सर का पूरा नाम था "सर आइजक न्यूटन"। महान गणितज्ञ, भौतिक वैज्ञानी और खगोल शास्त्री। सम्मान सहित उन्हे "सर" कहा जाता था। जनवरी माह में ही उनका जन्म हुआ था। इतना बड़ा नुकसान होने पर भी उन्होंने अपना मानसिक संतुलन बनाए रखा और अपनी गलती को स्वीकार किया। बेजुबान जानवर के सिर पर अपनी गलती को नहीं मढ़ा। अपने मस्तिष्क की शक्तियों पर पूरा विश्वास रखा और फिर से दुगुनी मेहनत से अपने रिसर्च पेपर को प्रकाशित करवाया।

नवरात्र में नौ कन्या को क्यों भोजन कराया जाता है

बद्री प्रसाद वर्मा अनजान गल्ला मंडी गोला बाजार गोरखपुर उ. प्र.

बहुत साल पहले की बात है|,एक नगर में एक गरीब औरत अपने पति और तीन बेटों दो बेटियों के साथ रहती थी। वह बहुत गरीब हो कर भी हर साल चैत और कुआर की नवरात्र में नौ दिन का नवरात्र व्रत रहती थी। और माता दुर्गा की श्रध्दा से पूजा पाठ करती थी। एक बार चैत का नवरात्र आया तब उस औरत ने अपने पति से कहा आप बाजार से पूजा की सारी सामग्री खरीद कर ला दीजिए मैं नवरात्र की पूजा और पाठ करुंगी। पत्नी की बात सुनकर पति बोला तुम बहुत सालों से नवरात्र व्रत रहती आ रही हो,मगर इस व्रत के रहने से हमारी गरीबी आज तक दूर नहीं हुई ऐसे व्रत रहने से क्या फायदा मेरी बात मानों तो नवरात्र का व्रत रहना छोड़ दो। पति की बात सुनकर पत्नी बोली आप कहते हैं तोंमैं छोड़ दूंगी मगर इसबार हमें व्रत रख लेने दीजिए अगले साल से मैं यह व्रत नहीं रहूंगी। इतना कहकर पत्नी नवरात्र व्रत रहने की तैयारी शुरु कर दी।

एक दिन वह औरत पूजा कर के अपने घर के बाहर कुर्सी पर बैठी हुई थी। तभी मां दुर्गा एक साधारण गरीब औरत का रुप धर कर उस औरत के घर आई और बोली

मैं दो दिन की भूखी हूं क्या कुछ खाने को मिल सकता है?"

बुढ़ी औरत की बात सुनकर वह औरत बोली आप इस कुर्सी पर बैठिए मैंअभी आप के खाने के लिए कुछ चीजे घर में लाकर देती हूं। इतना कह कर वह औरत घर में गई और एक थाली में केला सेव संतरा और उबला हुआ गंजी पेड़ा और तिन्नी के चावल का भात बकला का दाल और आलू की सब्जी और एक लोटा पानी ला कर उस बुढ़ी औरत के सामने खाने को रख दिया। बुढ़ी औरत जब खाना खा चुकी तो बोली बेटी तुम हमसे कुछ मांगो मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करुंगी। बुढ़ी औरत की बात सुनकर वह औरत बोली मां मैं बहुत साल से नवरात्र व्रत रहती आ रही हूं,मगर हमारी गरीबी आजतक दूर नहीं हुई। इससाल का यह हमारा आखिरी नवरात्र व्रत है अब मैं कभी नवरात्र व्रत नहीं रह पाऊंगी। औरत की बात सुनकर बुढ़ी औरत बोली बेटी तू इससाल नवरात्र के नवें दिन घर में हवन करने के बाद नौ कुंआरी कन्याओं के साथ एक बच्चे को भैरोनाथ मानकर उनको पुड़ी हलवा फल मेवा मिठाई का भोजन कराकर उनको कुछ रुपये का दान करना देखना एक साल से तेरी सारी गरीबी दूर हो जाएगी। ओ और तू और तेरा पति नगर का सबसे धनवान सेठ कहलाने लगेंगे। इतना कहकर वह बुढ़ी औरत वहां से चली गई।

एक साल के भीतर ही उस गरीब औरत का पति धन से माला माल हो गया और वह नगर का सबसे धनवान सेठ बन गया। गरीब औरत ने जब धनवान बनने की सारी कहानी लोगों को सुनाई तो सभी बहुत खुश हुए और तभी से नवरात्र में नौ कन्याओं को भोजन कराने की परम्परा शुरु हो गई जो आजतक जारी है।

अप्रैल फूल

रचनाकार :- पिंकी सिंघल दिल्ली

कहा जाता है कि जीवन जीने के लिए जीवन को जीवंत बनाए रखना अत्यंत आवश्यक होता है क्योंकि नीरस जीवन जीना किसी को पसंद नहीं होता है।जीवन में चुलबुलापन,हंसी मजाक और हास परिहास होना बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। जीवन को पूरी तरह से अर्थात जी भर कर जीने के लिए उसमें हास्य का पुट होना ही चाहिए और यह बात सभी उम्र के लोगों पर लागू होती है। कहा भी जाता है कि उम्र केवल एक संख्या मात्र होती है, अत: हर उम्र में जीवन को रंगों से सराबोर रखना और जीवन को हंस कर जीना न केवल हम सब का अधिकार है,अपितु हमारी महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों में से भी एक है।

इस बात को तो वैज्ञानिक भी मानते हैं कि हंसकर, मुस्कुरा कर जीने से जीवन की बहुत सारी परेशानियों से बचा जा सकता है और अपनी उम्र को बढ़ाया जा सकता है। असमय होने वाली बीमारियों से बचने का सबसे अचूक और असरदार माध्यम भी हमारी हंसी और मुस्कुराहट ही तो होती है। हंसते मुस्कुराते व्यक्ति को चाहे वह,किसी भाषा विशेष अथवा प्रदेश विशेष का ही क्यों न हो,उसके चेहरे की हंसी और मुस्कुराहट ही उसके व्यक्तित्व की पहचान करवा देती है। उसको अपना परिचय देने की आवश्यकता नहीं होती। हंसी मजाक करना हमारे स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना जाता है, इसलिए अपनी दिनचर्या में हम सभी को इसे अवश्य शामिल करना चाहिए।

आज के इस आलेख का विषय मूर्ख दिवस अर्थात अप्रैल फूल डे है जो अधिकतर पश्चिमी देशों में मनाया जाता है किंतु पश्चिमी देशों की होड़ में वर्तमान समय में विश्व के अधिकतर देशों में इसे मनाया जाने लगा है।ब्रिटेन,न्यूजीलैंड और दक्षिण अफ्रीका में इस दिवस को विशेष रूप से मनाया जाता है,इसके अतिरिक्त अन्य अनेक देशों में भी इस पूरे दिन हंसी मजाक और हास्य बना रहता है। हालांकि मूर्ख दिवस मनाने के लिए किसी भी देश में आधिकारिक तौर पर छुट्टी घोषित नहीं की जाती है। इस दिन लोग अपने दोस्तों, रिश्तेदारों,सगे संबंधियों और आसपास रहने वाले लोगों के साथ हंसी मजाक करते हैं, हास परिहास करते हैं और चुलबुली नटखट हरकतें करके जीवन को एक नया आयाम देने की कोशिश करते हैं ताकि वर्ष भर के तनाव को कुछ कम किया जा सके। कहने का तात्पर्य है कि इस दिन लोग जानबूझकर बेवकूफीपूर्ण हरकतें करते हैं। विशेष रूप से बच्चों को यह दिन मनाने में आनंद आता है और वे इस दिन अपने से छोटे-बड़े सभी को अप्रैल फूल बनाने की हर संभव कोशिश करते हैं और अप्रैल बनाने के बाद खुशी से झूम उठते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि जिस अप्रैल फूल को मनाकर हम सभी खुशी से झूम उठते हैं उस दिन को मनाने की शुरुआत कहां से हुई,तो आइए,आज जानते हैं कि अप्रैल फूल डे मनाना कब से शुरू हुआ।

गूगल से प्राप्त जानकारी के आधार पर अप्रैल फूल डे की शुरुआत 1381 में हुई थी। बताया जाता है कि उस समय के राजा रिचर्ड जीती और बोहेमिया की रानी ऐनी ने घोषणा करवाई कि वे दोनों 32 मार्च 1381 को सगाई करने वाले हैं और यह खबर सुनकर वहां की जनता को बहुत खुशी हुई और खुशी के मारे जनता झूम उठी। लेकिन 31 मार्च 1381 के दिन उसी जनता को समझ आया कि मार्च माह में 32 तो आता ही नहीं है और फिर वे समझ गए कि उन्हें मूर्ख बनाया गया है। तभी से 32 मार्च अर्थात 31 मार्च के अगले दिन 1 अप्रैल को अप्रैल फूल डे यानी मूर्ख दिवस मनाया जाने लगा।हालांकि अप्रैल फूल मनाए जाने के पीछे और भी कई कहानियां प्रचलित हैं।

19वीं सदी से पहले अप्रैल फूल दे इतना अधिक प्रचलित नहीं था,किंतु 19वीं शताब्दी के बाद अप्रैल फूल डे बहुत ही जोरों शोरों से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाने लगा और आज कल तो भारत में भी 1 अप्रैल को अधिकतर लोग हंसी मजाक,मस्ती और प्रैंक करते नजर आते हैं। इस दिन सभी लोग एक दूसरे को मूर्ख बनाने के नए-नए बहाने ढूंढते रहते हैं।अलग-अलग देशों में अप्रैल फूल डे को अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है और लोग साल भर इस दिन का बेसब्री से इंतजार करते हैं।इसका मतलब तो यही हुआ कि अप्रैल फूल डे भी बाकी त्योहारों की ही तरह है और अपना एक अलग महत्व रखता है जिसके इंतजार में सभी लोग रहते हैं।

अप्रैल फूल दिवस पर तो अनेकों गाने भी बने हुए हैं जिसमें से एक प्रसिद्ध गाना ...अप्रैल फूल बनाया उनको गुस्सा आया...जिसे बॉलीवुड का मशहूर गाना माना जाता है। कुछ देशों में तो इस दिन लोग अपना वेश बदलकर दूसरे लोगों को मूर्ख और बुद्धू बनाने की कोशिश करते हैं और जब वे इस कोशिश में कामयाब हो जाते हैं तो खुशी से चिल्ला उठाते हैं। कहने का मतलब यह है कि अप्रैल फूल दिवस मूर्ख दिवस बेशक है किंतु यह दिवस लोगों को आनंदित अवश्य करता है।किंतु जितनी सच्चाई इस बात में है उतनी ही सच्चाई इस बात में भी है कि हमारा हंसी मजाक,हास्य और चुलबुलापन भी एक दायरे में ही होना चाहिए क्योंकि दायरे और सीमाओं के बाहर किया गया मजाक

किसी के लिए हानिकारक भी सिद्ध हो सकता है। यदि इस दिन का पूरा मजा लेना है तो इस दिन को मस्ती भरे अंदाज में अवश्य मनाएं,किंतु इस बात का भी विशेष ध्यान रखें कि आपकी वजह से किसी दूसरे का नुकसान न हो और बात इतनी न बढ़ जाए कि किसी की जान पर बन आए क्योंकि ऐसा अक्सर देखा गया है कि मज़ाक में कही गई बातें कभी-कभी जानलेवा सिद्ध होती हैं तो इस बात का खास ध्यान रखा जाना चाहिए और इस प्रकार के मैसेज या कॉल्स किसी को नहीं करने चाहिएं जिसे पढ़कर और सुनकर व्यक्ति नाहक परेशान हो उठे और दिक्कतों का सामना करना पड़े। दूसरों को बेवकूफ बनाने का अंदाज बिल्कुल बच्चों की तरह होना चाहिए,जैसे बच्चे कहते हैं ना कि,,,उल्लू बनाया बड़ा मजा आया... इस प्रकार के छोटे-छोटे हंसी मजाक ही किए जाने चाहिएं और यदि प्रैंक भी की जाती है तो उस प्रैंक का स्तर इतना हो कि प्रैंक पूरी होने पर व्यक्ति खिलखिला कर हंसने पर मजबूर हो जाए, न कि ऐसा कि उसे प्रैंक की वजह से दिल का दौरा ही आ जाए।

चाय के बहाने

रचनाकार :- अशोक पटेल तुस्मा, शिवरीनारायण(छ ग)

एक जमाना था जब हम अपनी सँस्कृति,परम्परा और रीतिको आप अपने हुए अपनाते को रिवाज- गौरवान्वित महसूस करते थे।और इस कारण हमारा सीना तन जाता था। हमारी सँस्कृति से हमे तो नाज होता ही था पूरा विश्व भी हमारी सँस्कृति पर फख्र करता था।
इसी कारण पूरे विश्व मे हमारे भारत की सँस्कृति एक अलग पहचान बनाती थी।और अनुकरण भी करते थे।आज हम अपनी सँस्कृति से दूर भागते जा रहे हैं।और पाश्चात्य संस्कृति को धड़ल्ले से अपना रहे हैं।जिसको अपना कर हम अपने आप को ऊंचा स्टेटस का पर्याय समझने लगते हैं।जो कि उचित नही है।
हम बात कर रहे हैं चाय पीने की सँस्कृति की।
हम अन्तर्राष्ट्रीय चाय दिवस मना रहे हैं जिस जमाने मे जब हम चाय पीते थे तो कुल्हड़ का उपयोग करते थे।जो हमारी अपनी देश की मिट्टी से बना हुआ करता था।और इसी बहाने हम अपने देश की मिट्टी को अपने होठों से लगा कर चूम लिया करते थे।एक तरह से यह हमारी आत्मिक भावना को स्पस्ट करती थी।पर आज पूराहै।अपनी गया बदल परिदृश्य पूरा- कुल्हड़ सँस्कृति को भुला कर जिधर देखो उधर प्लास्टिक डिस्पोजल का धड़ल्ले से उपयोग कर रहे है। जो हमारी सँस्कृति के खिलाफ तो है ही।यह पर्यावरण की दृष्टि से भी बहुत खतरनाक है।
इस पर हमें जागरूक होने की आवश्यकता है।हमे अपनी मिट्टी का मान रखना होगा।अपनी पर्यावरण को बचाने का हर सम्भव प्रयास भी करना होगा।तभी हमारा अस्तित्व सुरक्षित रह पाएगा।
प्रति वर्ष 21 मई को अंतर्राष्ट्रीय चाय दिवस मनाते हैं।इसका उद्देश्य है कि बागानों में काम करने वाले मजदूरों की सुरक्षा उनके कल्याण हेतु शासन प्रशासन स्तर पर हर सम्भव प्रयास हो।और जनमानस में जागरूकता पैदा हो।और इसी को ध्यान में रखकर चाय बोर्ड का गठन किया गया ताकि उन श्रमिको को 21 मई को एक दिन अवकाश मिले।और यह संयुक्त राष्ट्र खाद्य और कृषि संगठन के लिए एक आधिकारिक अवकाश बन जाए।तो आइए हम इस चाय दिवस को एक महत्वपूर्ण दिवस मानते हुए मजदूरों के भलाई के लिए काम करें।और अपनी सँस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए हम कुल्हड़ का उपयोग करें।डिस्पोजल की सँस्कृति का बहिष्कार करें।ताकि पयार्वरण को प्रदूषित होने से बचा सकें।

नवरात्रि

रचनाकार :- अशोक पटेल "आशु" तुस्मा,शिवरीनारायण(छ ग)

नवरात्रि पर्व को हिंदुओं का प्रमुख और पावन पर्व के रूप में माना जाता हैऔर इस पर्व का पूरे भारतीयों को प्रतीक्षा रहती है। पर अलग-अलग प्रांतों में इसे अलग-अलग नाम देकर मनाया जाता है।इसे कहीं नवरात्रि तो कहीं नवरात्र,तो कहीं नवराते,या जगराता के नाम से जाना जाता है।इस पर्व का इसलिए भी अत्यधिक महत्व बढ़ जाता है क्योकि इसी चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही हमारे भारत मे हिंदुओं के द्वारा नववर्ष मनाया जाता है।तथा दूसरा सबसे अहम और धार्मिक कारण यह भी है कि इस पर्व में स्त्री शक्ति का प्रतिष्ठापन भी किया जाता है।अर्थात नव कन्या के रूप में देवी स्वरूपा नारियों की पूजा की जाती है।यही हमारे देश की सबसे बड़ी महिमा है। नवरात्रि शब्द संस्कृत शब्द से निकली है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है"नवरातें"।

इसके अलावा नवरात्रि से आशय "नवअहोरात्रों अर्थात विशेष रात्रियों से है।इस अवसर पर शक्ति के नवरूपों की उपासना की जाती है।यह नवरात्रि सिद्धि का प्रतीक भी माना जाता है।भारत मे हमारे सिद्ध पुरुषों के द्वारा दिन की अपेक्षा रात्रि को विशेष महत्व दिया गया है।इसीलिए दीपावली,होली,और नवरात्रि को रात्रि में मनाने की परम्परा है।यदि ऐसी कोई बात न होती तो रात्रि न कहकर दिन ही कहा जाता।साधना की दृष्टि से शारदीय और चैत्र मास का विशेष महत्व माना गया है।इन दोनों पर्वों में जनमानस आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति का संचयन करते हैं।और इसके लिए नाना प्रकार के व्रत,संयम,नियम,भजन किर्तन, योगसाधना,आदि करते हैं।कुछेक साधक इन रात्रियों में सिद्धासन में बैठकर आंतरिक त्राटक अर्थात बीज मंत्रों "की साधना करते हैं।नवरात्र का काल जागरण,काल कहलाता है।इस दौरान सृष्टि में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित होती है।नकारात्मकता दूर हो जाती है।इस प्रकार से इन नव रातों में मात्र और मात्र देवी के नवस्वरूपों की उपासना,आराधना की जाती है। वैसे तो नवरातें वर्ष में चार बार आती है।पर आश्विन मास और चैत्र मास का विशेष महत्व होता है।और इस नवरात्रि में महासरस्वती,महालक्ष्मी,महाकाली के नवरुपों की विशेष पूजा की जाती है।और इनके नाम और स्थान इस प्रकार है- योगमाया-नन्दादेवी, विंध्यवासिनी-शक्तिपीठ,रक्तदन्तिका-साथुर, शाकम्भरी-सहानपुर,दुर्गा-काशी,भीम-पिंजौर,और भ्रामरी-भ्रमराम्बा शक्तिपीठ यही सब देवियाँ नवदुर्गा के स्वरूप कहलाते हैं। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि यह नवरात्रि,देवी आराधना के माध्यम से नारियों की प्रतिष्ठा का पर्व नवरात्रि है।यही हमारे देश की सबसे बड़ी विशेषता है। जिसको पूरे देश वासी धूमधाम और भक्ति भावना के साथ मनाते है।

व्यंग्य

सोंचथँव का होही

रचनाकार :- प्रिया देवांगन राजिम जिला गरियाबंद छत्तीसगढ़

"राम–राम गा संगवारी। कइसे मालिक अतेक का लिखाय हे आज के गजट मा ? मुँह ले बक्का घलो नइ फूटत हे।" रामभरोस हा चौरा मा बइठे घनश्याम ले पूछीस।

"राम–राम गा भैया राम राम। हमर छत्तीसगढ़ के हाल ला पढ़त हँव ता मोला रोवासी घलो आवत हे।" एक पन्ना अउ पलटिस।

"का होगे संगवारी, का लिखाय हे तेमा तोला रोवासी आवत हे ?" रामभरोस हा घनश्याम ल पूछत चौरा मा बइठ गे।

"ता सुन। घनश्याम ह बोलिस- "आज कल हमर छत्तीसगढ़ के हर गली-मोहल्ला मा कवि मन के भरमार होगे हे गा।"

"हव सही कहे जी संगवारी।" रामभरोस हा हुकारू देवत रिहिस- "दू–चार लाइन ला लिख देथे अउ तुक्का मिला देथे ता जगह –जगह गोहार पारत फिरथे, मैं कवि आव...मैं कवि आव.... कहिके। अपन नाँव के आगू मा कवि लिखना चालू कर देथे। बपुरा मन ला न कोनो व्याकरण के ज्ञान रहय, न कोनो मात्रा के। व्याकरण तो व्याकरण मात्रा अउ छत्तीसगढ़ी शब्द के हाल ला बिगाड़ के रख देहे। तभे तो हमर छत्तीसगढ़ पिछड़त जात हे। अब देख न तही हा रामभरोस भैया। परियावरन, दुरुग, भेलाई, रइपुर, रोटि–पिठा,, सीरी राम जी का आरती। अइसने अब्बड़ अकन रचना मन ला पढ़े अउ देखे ला मिलथे। संपादक मन घलो जस के तस कापी–पेस्ट कर देथे। फेर कवि मन ला का पूछना, आगास मा उड़े ला धर लेथें, फलाना जगह मोर रचना छपे हे कहिके। अउ तो अउ बड़े–बड़े मंच मा जाके, कवि सम्मेलन करके सम्मान पा जाथे। अधजल गगरी छलकत जाय। बोले बर सीख गे ता कवि बन गे। अउ उही ला कोनो लेखन के परीक्षा होही, ता सौ झन मा बीस झन भर पास हा ेही तइसे लगथे। सिरिफ माइक ला धरके सम्मान पवई हर कोनो ल कवि नइ बनाय। दूसर के नाम ला तो बिगाड़ के लिखत हे। परभा, सरसती, जागेसर। अपन नाम ला काबर बने लिखथे, "जागेसर वरमा" लिखना चाही। जगह–जगह तो इही मन सम्मान ला बटोरत रहिथे। आजकल तो गुगल मिट मा ऑनलाइन प्रशस्ति पत्र मिलत हे। बड़े–बड़े साहित्यकार, जेन मन व्याकरण के डोर ला कस के पकड़ राखे हे, तेन मन तो बोटोर–बोटोर इँखरे मन के मुँह ला देखत रहिथें। सोसल मीडिया के जमाना हे। लमा–लमा के लिख देथे, फलाना जगह के कवि सम्मेलन मा सम्मान प्राप्त। देखइया मन हर तको कमती नइ रहें। ठेंगा ला देखा दे थे, ता पोस्ट करइया खुश हो जथे बने पसंद करे हे मोर फोटू ला। अब ठेंगा दिखइया जानही के लाइक करे हे या ठेंगा दिखा हे तेला।

"पुस्तक छपवाए मा कमी नइ करय। फेर आजकल तो सुने मा आथे जी घनश्याम।" रामभरोस बोलते रिहिस- कवि सम्मेलन म घलो अपनेच आदमी अउ संगवारी मन ला बलाथें।

"अरे का बताँव रामभरोस भैया। पइसा फेंक, तमाशा देख, के जमाना हे गा। तैं कवि सम्मेलन करवाबे त मोला बलाबे अउ मँय कवि सम्मेलन कराहूँ त तोला बलाहूँ। अउ धोखा ले तोला नइ बलायेंव ता तोर–मोर दोस्ती खतम। घुघुवा ले जादा बड़े मुहूँ फूल जाथे। बिचारा घुघुवा फोकट बदनाम हे मुहूँ फुलई मा। हमर पुरखा साहित्यकार मन सरग ले देखत होही ता गारी घलो देवत होही। साहित्य ला खेल–तमाशा बना डरे हे भुइंयाँ मा तो।

गोठियात-गोठियात बेरा अगास मा चढ़गे। अउ कलेचुप रामभरोस अपन घर कोती रेंग दिस। घनश्याम ह गजट ला घरी करके तरी मा मढ़ा दिस। मुड़ धर के बइठगे- "हे राम ! हमर साहित्य के का हाल होवत हे ?अब हमर का होही परमात्मा ?

लिपिस्टिक

रचनाकार :- श्रीमती योगेश्वरी साहू शासकीय प्राथमिक शाला-डोटोपार बलौदाबाजार(छ.ग.)

साहू मैडम कुछ दिनों से बहुत परेशान थी। समझ नहीं आ रहा था कि वह अपनी परेशानी किसे कहे। आज जब लंच ब्रेक में लीना मैडम के साथ बैठी तो लीना मैडम ने उनसे पूछा कि मैडम आप पिछले कुछ दिनों से बहुत परेशान लग रही है क्या बात है? घर में कोई परेशानी है क्या? साहू मैडम ने कहा नहीं मैडम घर में कोई परेशानी नहीं है। तो क्या बच्चों परेशान कर रहे है? साहू मैडम ने कहा घर के बच्चे नहीं, यहां हमारे स्कूल के बच्चे परेशान कर रहे है। स्कूल के बच्चे... वो कैसे मैडम ? तब मैडम ने बताया कि--- मिडील स्कूल की सारी लड़कियां आजकल लिपिस्टिक लगा के स्कूल आ रही है। तो इसमें इतना परेशान होने की क्या बात है मैडम। बात लिपिस्टिक की नहीं उनके उमर की है। इस उम्र में लड़कियों को पढ़ना, खाना और खेलना चाहिए न कि होंठों में लिपिस्टिक लगाना। अब कल ही बात ले लो जब केशर, निशा, काजल और खुशबू हाथ धोने बोरिंग के पास आये थे, मैंने उन्हें कहा कि ये क्या तुम लोग लिपिस्टिक लगाकर स्कूल आते हो ? तो निशा ने पलटकर जवाब दिया तोला काय करें बर हे मेडम तोर पइसा के नो हरे ये लिपिस्टिक ह। सारी लड़कियां वहां से दांत दिखाते चली गई और में वहीं अवाक खड़ी रही गई। निशा ने जिस तरह मुझे पलटकर जवाब दिया था यह मुझे सोचने के लिए मजबूर कर दिया था कि ...अब ये वो बच्चे नहीं रह गये थे जो अपने टीचरों की बात मानें।

बात अभी कि भी नहीं है दो महीने पहले जब स्कूल खुला तो केवल केशर कभी- कभी लिपिस्टिक लगाकर आती थी, तब भी मैंने उसे डांटा था। फिर धीरे धीरे ये सभी लड़कियों का शौक बन गया। अच्छी आदतें ये अपनाती नहीं और खराब शौक कितनी जल्दी अपना ली। दिन ब दिन लड़कियों का ध्यान अपने सजने संवरने पर अधिक और पढ़ने लिखने में कम हो गया है। अगर यही हाल रहा तो ये बच्चियां कालेज का मुंह भी नहीं देख पायेंगी। इसलिए मैं बहुत परेशान हूं। मैं इन बच्चियों को ऐसे ही फैशन की गिरफ्त में जाते नहीं देख सकती हूं। इसलिए मैं कुछ करना चाहती हूं? इस काम में मुझे आपकी मदद की जरूरत है? लीना मैडम ने कहा.... जी जरूर मैडम। रात को साहू मैडम के आंखों से नींद कोसों दूर था। बहुत सोचने पर कोई उपाय नहीं सूझ रहा था। अचानक मैडम को एक उपाय सूझा। उनकी आंखों में चमक आ गई। दूसरे दिन मैडम बहुत तरोताजा महसूस कर रहा थी। सुबह स्कूल गई तो बच्चों के साथ खूब खिलखिलाई। आज जब केशर दिखी तो उसके लाली लिपिस्टिक की तारीफ भी कर दी-अब्बड़ सुंदर दिखत हे केशर तोर लिपिस्टीक ह। कोनो ले हे तोर लिपिस्टिक ल। केशर खुश होकर बोली-मोर अम्मा लाने हाबय मेडम। मैडम अब गाहे-बगाहे लड़कियों की तारीफे करने लगी। एक दिन जब लड़कियां बैठी थी मैडम उनके पास जाकर खड़ी हो गई और उनकी बातों में शामिल हो गई। लड़कियों की पूरी बात क्रीम, पावडर और फैशन के ऊपर चल रही थी। एक दिन अचानक बाजार में निशा अपने पापा के साथ मुझे मिली. बिना किसी अभिवादन के मुझसे बोली-मेडम ते ह तो हमन ल लिपिस्टिक लगाय बर मना करत रहें हस, अब ते काबर लिपिस्टिक लगाए हाबस? उसके पिता सन्न रह गये। मैं चुपचाप खड़ी रह गई। उसने स्कूल में सभी लडकियों को बताया कि मैडम भी लिपिस्टिक लगाती है। कुछ दिनों में बात आई गई हो गई। साहू मैडम ने दृढ़ निश्चय किया कि अब पानी सिर से ऊपर हो गया है इलाज शुरू करना ही होगा। दूसरे दिन स्कूल में एक मिंटीग बुला कर सभी के सामने ये बात रखी कि लड़कियों के इस फैशन को कैसे कम करें ताकि वो पढ़ाई पर फोकस कर सके। किसी शिक्षक ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई लेकिन साहू मैडम हार मानने को तैयार नहीं थी।

दूसरे दिन प्रार्थना में सभी लड़कियों को २चोटी बना कर स्कूल आने को कहा, नहीं आने वाली को दस रूपया फाइन। दूसरे दिन सभी लड़कियां मन मारकर दो चोटी बनकर पहुंची। फिर एक दिन सभी की मांओं को स्कूल बुलवाया और बात की। बातचीत में पता चला कि वे सब भी बहुत परेशान हैं। भुमि की मां जाते समय रो पड़ी और बोली-मैडम मोर बेटी ल बचा ले, रात दिन फैशन के गोठ करते रहिथे काहि कहिबे त मोला-- "निच्चट अप्पढ़ काही नइ जानस कहीं देथे"। ये फेशन म पड़ के मोर बेटी ह आघू नइ पढ़ सकय तइसे लागत हे? आने वाले दूसरे शनिवार को मैडम ने लड़कियों की एक अलग बाल सभा का आयोजन करने का फैसला लिया। लड़कियों को पहले से बता दिया गया यह केवल लड़कियों की बालसभा है इसलिए आप सभी अपनी प्रस्तुतिकरण की तैयारी करे।

मैडम ने कुछ मेहमानों को भी बुलवाया। शनिवार को लंच के बाद लड़कों और शिक्षकों की छुट्टी कर दी गई और बाल सभा का कार्यक्रम शुरू की किया गया-अंजली आज मंच संचालन कर रही थी। बहुत ही सुघड़ और सलीके से सबको मंच पर आने का न्योता दे रही थी तभी अचानक एक कार आकर रुकी। लड़कियों का ध्यान उस ओर गया। उसमें से चार - पांच महिलाएं उतरी और स्कूल के अंदर आ गई। साहू मैडम ने सबका अभिवादन किया और उन्हे बालसभा में ले कर आ गई। एक काले कोट में वकील साहिबा थी, दूसरी नर्स दीदी

थी, बाकी तीन कौन थे ? सब ये जानने को बहुत उत्सुक थे। तब मैडम ने परिचय करवाया कि ये कविता है. एक ब्यूटीपार्लर चलाती है। ये सरोजनी है बगल गांव की सरपंच और ये मेरी सहेली सुनीला है। आज ये सब तुम लोगों से मिलने आई है। सबसे पहले नर्स दीदी ने लडकियों में होने वाले शारीरिक बदलावों की जानकारी दी। फिर साफ सफाई के बारे में समझाया। फिर वकील साहिबा ने उन्हें उन्हें बाल विवाह के दुष्परिणाम के बारे में समझाया। अब सरपंच सरोजनी ने बताया कि कैसे उसने मजदूरी करके अपनी पढ़ाई पूरी की और शादी के बाद भी पढ़ रही है और आज अपने गांव की सरपंच है। मैं हमेशा लड़कियों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती हूं। अब बारी कविता दीदी की थी। दीदी ने बताया बच्चों के चेहरे तो ऐसे ही सुंदर होते हैं उनमें लिपा पोती की जरूरत नहीं होती है। सौंदर्य प्रसाधनों सामग्रियों में विभिन्न तरह के हानिकारक तत्व मिले होते हैं जो बच्चों की त्वचा को नुकसान पहुंचाते हैं। और रोज लिपिस्टिक लगाने से आपके होंठ काले और खराब हो जायेंगे फिर मैडम ने बताया कि मेरी एक सहेली है जिसे तुम लोगों की तरह लाली लिपस्टिक लगाना बहुत पसंद था जो आज यहां तुम लोगों से मिलने आई है। ऐसा कहकर सुनीला को मंच पर बुलाया। लड़कियां जोर -जोर से ताली बजाने लगी। सुनीता ने कहा ना मैं वकील हूं,ना नर्स, ना मैडम, ना सरपंच मैं तो केवल घर में बच्चे और परिवार संभालती हूं। मैं तो केवल आठवी पढ़ी हूं। लड़कियां दंग रह गई जो सबसे ज्यादा सुंदर और सजी धजी दिख रही थी | सुनीला दीदी ने बताया मैं पढ़ाई में बहुत होशियार थी। कक्षा पांचवी तक हमेशा अव्वल आती थी। कक्षा ६पहुचने पर नयी- नयी सहेलियां बनी। नया नया फेशन शुरू हुआ।दो चोटी, एक चोटी में बदला सहेलियों के साथ घूमना फिरना बढ़ा और पढ़ाई से मन फिसलने लगा था। जब आठवी में पहुंची एक दिन लिपिस्टिक लगाकर स्कूल गई मेरी सहेलियों ने कहा बहुत अच्छी लग रही है लिपिस्टिक में। उस दिन से रोज लिपिस्टिक लगाने लगी। कुछ और लड़कियों ने लगाना शुरू कर दिया। एक दिन बड़े सर ने बुलाकर बहुत फटकार लगाया। दूसरे दिन से सब लड़कियां सुधर गई पर मैं कहां मानने वाली थी बड़े सर ने फिर प्यार से समझाया, मैं फिर भी नहीं मानी। तब मेरे पिता जी को बुलवाया और समझाया सुनीला बहुत होशियार लड़की है अभी उम्र नहीं है फैशन करने की आप लोग उसे समझाइये। मां पिता जी ने बहुत समझाया पर मैं नहीं सुधरी। मेरी सहेलियां चाट पकौड़ी में पागल थी और में मूरख लाली लिपिस्टिक में। मुहल्ले के लोग बातें बनाने लगे थे। पढ़ाई में मेरा ध्यान लगता ही नहीं था. टीचर भी समझा समझा के थक गये। जैसे तैसे करके आठवी पास की। फिर पढ़ाई नहीं करूंगी कि रट लगा दी। मां-पिता जी ने हारकर मेरी शादी कर दी। धीरे धीरे चार बच्चे हो गये। घर के काम और चार बच्चों में लिपिस्टिक लगाना भूल गई। मेरा पति बहुत शराबी और जुआड़ी। मुझे बहुत पीटता भी है। मेरी सारी सहेलियां पढ़ लिख कर बड़े बड़े पदों पर पहुंच गई। सब लोग अपने पैरों में खड़ी हो गई, और मैं वहीं रह गई अपने लिपिस्टिक के साथ। सब लोग अपने लिए कमा रही है। मैं अपने परिवार और बच्चों को सम्हाल रही है। मैं कोसती हूं उस दिन को जब पहली बार मैंने लाली लिपिस्टिक लगाया था। अब तुम सब डिसाइड कर लो कि तुम्हें लिपिस्टिक लगाकर मेरी तरह जीना है या बिना लिपिस्टिक के पढ़ना और आगे बढ़ना है। लड़कियां हैरान थी जो सबसे ज्यादा सुंदर दिख रही थी, वो ही सबसे कम पढ़ी लिखी औरचार बच्चों की मां थी। और बाकी सब लोग अपने पैरों में खड़ी थी।

अब आखरी बारी साहू मैडम की थी। मैडम ने बताया मुझे भी बहुत मन करता था लिपिस्टिक लगाने का तब मेरी मां ने समझाया लिपिस्टिक लगाकर चेहरा चमकाना छोड़ो और पढ़ाई कर अपना भविष्य चमकाओ। तब मैं अपनी मां की बात मानकर पढ़ती गई और आज इस मुकाम पर हूं। आज मेरे पास कई रंग की लिपस्टिक है जिसे में मुझे जब मन करता है मैं तब लगाती हूं। मैं तुम लोगों को मना नहीं कर रही हूं, लिपस्टिक लगाओ शादी में, त्यौहार में घर में कभी कभी। इसलिए मेरी प्यारी बच्चियों इस फैशन को छोड़ पढ़ाई पर ध्यान दो। लड़कियों को समझ आ गया था।

लिपिस्टिक लगाकर चेहरा चमकाने से अच्छा पढ़ाई कर भविष्य चमकाना। सबने मैडम को वादा किया कि वे सब कभी लिपिस्टिक लगाकर स्कूल नहीं आयेगी। मैडम ने अपनी सभी सहेलियों को धन्यवाद दिया। अगले सोमवार जब सारी लड़कियों स्कूल आई तो २चोटी बनाकर बिना लिपिस्टिक लगाए। साहू मैडम आज बहुत खुश थी। इन बच्चियों के आने वाले सुनहरे भविष्य को देखने लगी।

पहेलियाँ

डॉ. कमलेन्द्र कुमार रावगंज, कालपी, जिला जालौन, उत्तर प्रदेश

1. अगर कहीं जब मेघा बरसे,
साथ मुझे ले जाओ।
अगर सताए धूप कहीं तो,
छांव सदा तुम पाओ।।

2. कहीं दूर तक चलते चलते,
अगर कभी थक जाओ।
मेरे पास तुम आना हरदम,
छांव सदा ही पाओ।।

3. जाड़ों में मैं सखी सहेली,
सदा ही बनकर आऊँ।
गर्मी में सब डरते मुझसे,
मैं दुश्मन कहलाऊँ।।

4. दूर दूर तक मिले न पानी,
रेत सदा तुम पाओ।
गुल्लो, आशी, तारा ,मुनमुन,
इसका नाम बताओ।

उत्तर 1-छाता, 2-पेड़, 3-धूप, 4-रेगिस्तान

डॉ. कमलेन्द्र कुमार रावगंज कालपी जिला जालौन, उत्तर प्रदेश पिन 285204

1 तीन पंखुड़ी इसमें होती, और कभी है चार।
गर्मी में सब इसको चाहें, महिमा अपरंपार।।

2 घर घर आते झोला लेकर, साथ खुशी भी लाते हैं।
कभी सुनाते दुःख की ख़बरें, बोलो क्या कहलातें हैं?

3 देते हमको ज्ञान खजाना, नई दिशा दिखलातें हैं।
खेल खिलाएं सदा पढ़ाएं, हमें बहुत ही भातें हैं।।

4 हमें पढ़ाती हमें सिखातीं, और प्यार भी करतीं हैं।
प्रथम गुरु वह मेरी बनकर, उलझन मेरी हरतीं हैं।।

5 कभी बनाते मंदिर मस्जिद, और कभी गुरुद्वारा।
जरा बताओ प्यारे बच्चों, देखें ज्ञान तुम्हारा।

उत्तरः 1पंखा, 2डाकिया ,3अध्यापक, 4 माँ, 5 राजमिस्त्री

व्यग्र पाण्डे कर्मचारी कालोनी,गंगापुर सिटी (राज.)

1 पहन सदा पितांबरी वाना, मंद मंद जो गाये तराना
उड़े मगर पंछी ना कोई, काटे तो याद आये नाना।

2 गंदगी जिसे सदा सुहाये, यहाँ वहाँ जो भिनभिनाये
अंधेरे में चुप जो रहती, उजाले में उत्पात मचाये ।

3 तन के छोटे काम के खोटे, पानी में उपजे खून पिए
नींद उठाये रात में आये, कही पहेली किस के लिए।

4 दिखने में जो सुक्ष्म जीव, धरती अंदर वास बनाती
बड़े बड़े पेड़ों संग वस्तु, जो जल्दी ही चट कर जाती ।

5 खुद छोटी पर नाक बड़ी, रहती ना जो कभी खड़ी
मीठा कितना रखो छिपाकर, पहुंचे वो वहाँ लड़ी की लड़ी ।

[पहेली उत्तर - (1) ततैया (2) मक्खी (3) मच्छर (4) दीमक (5) चींटी ।]

गौरीशंकर वैश्य विनम्र आदिलनगर, विकासनगर लखनऊ

1) वर्ष 1954 में शुरू हुआ,
है सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार ।
जल्दी सोचो. नाम बताओ,
देती है भारत सरकार ।

2) रहे पूर्व उप प्रधानमंत्री,
भाजपा के वरिष्ठ हैं नेता ।
रामजन्मभूमि आंदोलन नायक,
कौन है 'भारत रत्न 'विजेता ।

3) पूर्व मुख्यमंत्री बिहार के,
मरणोपरांत मिला 'भारत रत्न ।'
'गरीबों का मसीहा 'कहलाए,
वे थे पिछड़ा वर्ग के रत्न ।

4) देशभक्त किसान नेता थे,
किया जमींदारी उन्मूलन ।
भूतपूर्व प्रधानमंत्री थे .
'भारत रत्न' से है अभिनंदन ।

5) आर्थिक विकास को नई दिशा दी,
देशोन्नति में है योगदान ।
मरणोपरांत प्रधानमंत्री को,
'भारत रत्न' मिला सम्मान ।

6) हरित क्रांति के जनक कहाए,
थे आनुवांशिकी कृषि विज्ञानी ।

'भारत रत्न' मरणोपरांत मिला है,

खाद्य उत्पादन की लिखी कहानी |

उत्तर – 1)भारत रत्न, 2) लालकृष्ण आडवाणी, 3) कर्पूरी ठाकुर, 4) चौधरी चरण सिंह, 5) पीवी नरसिम्हा राव, 6) डॉ एमएस स्वामीनाथन

डॉ अलका अग्रवाल फ्लैट नम्बर, जानकी विहार अपार्टमेंट शिव मार्ग, बनीपार्क जयपुर

बचपन में ही हम आ जाते
बिना हमारे कैसे खाते।
अगर रखोगे ध्यान हमारा,
जीवन भर हम साथ निभाते।

हवा भरो तो फूल फूल कर,
मोटा मैं हो जाता हूं।
मुझे छोड़ दो तो मैं झट से,
नभ में ही उड़ जाता हूं।

चमक- चमक कर नाच दिखाती, नभ के रंगमंच पर।
गरज- गरज कर ढोल बजाता,
बादल मेरा सहचर।
उत्तर(नभ में बिजली)
पंख मेरे पर कभी ना उड़ता,
छत पर लटका रहता हूं।
गर्मी सबकी दूर भगाकर,
सबको ठंडक देता हूं।

पीला पीला और मधुर हूं,
जो देखे खा जाता।
इन्हीं गुणों से बना हुआ हूं,
सभी फलों का राजा।
1) (दांत) 2) (गुब्बारा) 3) (पंखा) 4) (आम)

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी वर्ग पहेली)

रचनाकार - दीपक कंवर (शिक्षक)

1 दू		2				3 अं		4	5
				6				7 हूँ	
				8 म					
		9	10 से					11 ह	
	12				13 ता		14 ध		
15 गि		16							
					17 ब	18			19
	20 अं			21		22			
23 ला				24				25 ब	
26						27 र			

बाएँ से दाएँ:- 1. दुधमुहा 3. कमीज, कुर्ता 7. पुकार,चिल्ला 8. रजामंदी 9. सीढ़िया 11. हाँ 13. योजना बनाना 15. चमगादड़ 17. जंगली मुर्गा 20. छत का किनारा 22. चप्पल 23. पोपकोर्न 24. कान छेदने ,श्रृंगार सामान बेचने वाला 25. जल, जला, जलना 26. बांध 27. रसोई कक्ष

ऊपर से नीचे:- 1. चींटी 2. मछली के बच्चे 3. आंवला 4. रहूँगा 5. भोज कार्यक्रम 6. डिब्बा, बोतल दीया 10. सेंकने का कार्य 11. प्रति (हिंदी) 12. शौक 14. धान कूटने का मशीन 15. 16. कतार से लगा 18. नर्तक 19. राहल 20. परम्परागत सृंगार 21. तीतर 23. रिश्ता, नाता 25. मजदूरी `

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 गु	ज	गु	ल		2 न	3 क	सु	र्री	
जु				4 चिं	ग	री			4 बा
6 म	7 र	घ	8 टी	या		9 ल	10 स	ल	सा
11 ब	ही		ट		12 घ		र		
री		13 बि	ही		न		14 ई	च्चि	15 दे
	16 ला	सा		17 उ	घ	रा			व
18 बी	ल	वा		19 ख	ई		20 सु	ख	रा
ह			21 ब	रा			र		नी
22 नि	शा	च	र		23 सु	र	ता		
या			24 हा	ल	त		25 त	री	या